चैतन्य लहरी

1990

खंड 2, अंक 11 व 12

सहजयोग की स्थापना करने का उत्तरदायित्व हम सबका है। हमें सर्व-प्रथम सहजयोग अपने अन्तस में स्थापित करना है। यदि आप प्रसन्नचित्त नही है और यदि हंसी आपके अन्तस से फूट नही पड़ती तो आपमें कोई अभाव अवश्य है जिसका तुरन्त सुधार होना आवश्यक है। देदीप्यमान

श्री. माताजी निर्मलादेवी.

श्री गणेश पूजा

तिरोल - आस्ट्रिया - 26 अगस्त 1990

श्री माता जी का भाषण

श्री गणेश के समान आप सब के चेहरों पर भी अत्यन्त सुन्दर चमक है। आपके छोटे, बड़े या वृद्ध होने से कोई फर्क नही पड़ता। श्री गणेश के हमारे अन्दर प्रवाहित होने से ही हमें सौंदर्य प्राप्त होता है। श्री गणेश क्योंकि सभी देवताओं की शक्ति का स्त्रोत है इसलिए उनकी प्रसन्नता की अवस्था में हमें किसी अन्य देवता की चिन्ता नही करनी पड़ती। उपकुलपति की भांति वे हर एक चक्र पर विराजमान रहते है। उनकी इच्छा के बिना कुंडलिनी का उत्थान नही हो सकता क्योंकि कुंडलिनी श्री गणेश जी की आदि-कुमारी-गौरी माँ है। हम सब की श्री गणेश जी के प्रति उदासीनता ही पाश्चात्य समाज की कठिनाइयों का कारण है। ईसा अवतरित हुये और उनका संदेश विश्व भर में फैला। ईसाई लोग उनकी बताई गयी बातों के अनुसार आचरण नही करते। उनके विश्वास का आधार सत्य नही है। सत्य यह है कि ईसा के रूप में श्री गणेश ही अवतरित हुये। यदि यह सत्य है तो इसाई लोग श्री गणेश के प्रकाश में ईसा के महान अवतरण को समझें। उन्होंनें लोगों को बताया कि "आपकी दृष्टि अस्वच्छ नही होनी चाहिये"। वास्तव में कोई महात्मा यह नही जानता कि अस्वच्छ (मैली) दृष्टि क्या होती है क्योंकि वह तो केवल देखता मात्र है। संत ग्यानेश्वर ने बड़े सुन्दर शब्दों में कहा है "निरंजनी पाही" अर्थात बिना किसी प्रति-क्रिया के देखना। अबोधिता के इसी गुण को हमारे प्रभु ईसा प्रकाश में लाये। परन्तु हमने इस गुण को आत्सात नही किया।

आज आप श्री गणेश की पूजा कर रहे है पर इस पूजा का अभिप्राय क्या है? पूजा के माध्यम से आप अपने गणेश को जागृत कर उनके गुणों को अपने अन्दर लाना चाहते है। श्री गणेश की अबोधिता का अनुभव आपको अपनी दृष्टि में होना चाहिये अन्यथा आप पाखन्डि है। यहां बैठ कर श्री गणेश की पूजा करते हुये यदि श्री गणेश की तरह आपका चित्त अपने उत्थान की ओर नही है तो आपकी पूजा व्यर्थ है। श्री गणेश शाश्वत शिशु है। अहं तथा बंधनों से वे परे है। हमें भी अपनी माँ के शाश्वत शिशु बनना है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिये हमें अपनी कुंडलिनी को उठाना है और सहस्रार में संधर करके अपने चित्त को अधिकाधिक समय वहां रख कर, बिना किसी प्रतिक्रिया के, ध्यान मग्न रहना है।

"प्रति क्रिया विहीनता" का अभिप्राय केवल देखना मात्र है। बिना इसके विषय में सोचे जब आप देखते है तो सत्य, जो कि वास्तव में काव्य है, प्रकट होता है। यही कारण है कि एक कवि किसी साधारण व्यक्ति से अधिक देख पाता है। अन्तर्निहित सौंदर्य

आपके अवलोकन में भर जाता है और आप भी इसे देखने लगते है। आपने बच्चे तो देखे है वे जिस भी जाति या देश से सम्बन्धित हो प्रायः अति सुन्दर होते है। जापान में एक बार मैं एक मंदिर में गयी । कुछ पाश्चमी महिलाओं ने यह कह कर कि "जापानी बच्चे आपको डाइन कहेंगे" मुझे वहां जाने से रोका। मैं जब वहां गयी तो सभी बच्चे दौड़कर मुझसे चिपट गये, वे मुझे वहां से जाने ही न दे रहे थे तथा मेरी साड़ी तथा हाथों को चूम रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि जो बच्चे मेरे तथा मेरी पुत्रियों के प्रति इतने मधुर थे वे उन महिलाओं को डाइन कैसे कह सकें। उन बच्चों की माताएं भी हैरान थी क्योंकि प्रायः वे विदेशी महिलाओं को "डाइन" तथा पुरुषों को "राक्षस" कह कर बुलाते थे। तब मुझे अहसास हुआ कि उनके अन्दर श्री गणेश जागृत हो गये है। जन्म के समय सभी का गणेश तत्व जागृत होता है। सभी पशुओं का, विशेषतः पक्षियों का, गणेश तत्व पूर्णतया अखंड होता है। पक्षी साइबेरिया से आस्ट्रेलिया तक दूरी उड़ कर पार कर सकते है। दिशा ज्ञान श्री गणेश की देन है। श्री गणेश ही उनके अन्दर का चुम्बक है। हमारे अन्तःस्थित यह चुम्बक अबोध तथा निष्कपट व्यक्तियों को हमारी ओर आकर्षित करता है तथा राक्षस प्रवृति के लोगों को हमसे दूर भगाता है। इस चुम्बक में यह दोनों गुण निहित है, यह कपटी लोगों को हमसे दूर भगाकर निष्कपट मनुष्यों को हमारी ओर आकर्षित करता है। यही कारण है कि अपने भरसक प्रयत्न के बावजूद हम कुछ लोगों को सहन नहीं कर सकते। श्री गणेश ही इसका कारण है।

पाश्चम में लोगो ने श्री गणेश तत्व की विकृति के विषय में बहुत कुछ कहा। दूरदर्शन तथा यत्र-तत्र इसके विषय में बताया गया। छोटे छोटे बच्चे गणेश तत्व की समस्याओं से पीड़ित है। दूषित वातावरण के कारण वे इन समस्याओं के शिकार हो जाते है। सहजयोग में भी कुछ लोग पाखन्डियों की तरह अड़ जाते है तथा उनका गणेश तत्व विकृत हो जाता है। परन्तु ऐसे लोगों का पक्ष लेने वाले व्यक्ति भी है। इस प्रकार की सहानुभूति पाने और देने वाले दोनों के लिये हानिकारक है क्योंकि पानेवाला अपनी समस्या से छुटकारा नहीं पा सकता तथ सहानुभूति देने वाला व्यक्ति भी उन्हीं समस्याओं में फंस जाता है। धरा माँ पर बैठ कर श्री गणेश अथर्वशीर्ष पढ़ो तथा श्री गणेश का ध्यान करो। आपकी समस्यओं का अंत हो जायेगा। ऐसी समस्याओं से सहानुभूति {सह+अनुभूति} का अर्थ है कि आप भी उन समस्याओं के हिस्सेदार बन रहे है। किसी भी अनुचित वस्तु का साथ मत दो। यदि आप वास्तव में किसी व्यक्ति से प्रेम करते है और उसका हित चाहते है तो उसकी त्रुटियां अवश्य बता दो।

सहजयोग में मैनें कई सत्तर वर्ष के वृद्ध लोगों को भी विवाह के लिये उत्सुक पाया है। सहजयोग में अलेकलापन तो सम्भव ही नही। आपके पास बहुत से सहजयोगी होते है। मेरे लिये कभी ऐसा अकेलापन नही होता जब मैं वास्तव में स्वयं को अकेला पाऊं। अकेले में मैं सर्वाधिक आनन्द लाभ करती हूँ क्योंकि यही वह समय होता है जब हम अपनी उपलब्धियों पर दृष्टिपात करते है।

मूलाधार की समस्याग्रस्त सभी व्यक्ति जान ले कि ये समस्याएं नर्क में जाने का पक्का प्रमाण पत्र है क्योंकि मूलाधार की समस्या के कारण ऐसे रोग उत्पन्न हो जाते है जिन्हे चिकित्सक असाध्य रोग कहते है। मल्टीपल स्लेरोसिज, मांस पेशियों की विकलांगता आदि मूलाधार की समस्या के कारण कैंसर का भी आरम्भ हो सकसता है। अन्य देशों की अपेक्षा पश्चिमी देशों में अधिक कैंसर क्यों होता है? मूलाधार की खराबी के कारण स्किजोफ्रेनिया रोयग भी हो सकता है। एडस मूलाधार की समस्या के सिवाए कुछ भी नही । फिर भी स्वयं को मृत्योन्मुख एडस् के सिपाही कह कर यदि आप अपना बलिदान करना चाहे तो हम ऐसे मूर्खों के लिये क्या कर सकते है। बुद्धिहीनता भी मूलाधार की विकृति के कारण होती है क्योंकि श्री गणेश ही सुबुद्धि के दाता है। आप विवेक कैसे पाते है? केवल श्री गणेश को जागृत करके । लोग भिन्न प्रकार के अविश्वसनीय मूर्खताएं करते है। जैसे हाल ही में भारत से बड़े आकार की चूंडियां लाने को कहा तो मुझे बताया गया कि आजकल बड़ी चूंडियां उपलब्ध नही है। बड़ी चुंड्यां अमेरिका चली जाती है क्योंकि वहां के पुरूषों ने चूंड्या पहनने का निर्णय किया है। भारत में किसी पुरूष को चुंड्या देने का अभिप्राय उसके पौरूष को चुनौती देना होता है। मूलाधार ठीक न होने के कारण यह सब मूर्खताएं होती है। भारत में,उदाहरण के रूप में हम सब स्त्रियां साड़ीयां पहनती है क्योंकि इस प्रकार हम ग्रामीण साड़ीर उद्योग की सहायता करती है, शरीर प्रदर्शन न करके हम स्वयं को अच्छी तरह से ढक सकती है और तीसरा लाभ यह है कि साड़ी पहनकर हम अपने बच्चों का पोषण सुगमता से कर सकती है। अतः साड़ी पहनने के कई कारण है परन्तु लोग तर्क संगत विधि से नही सोचते। वे सोचते है कि साड़ी पहनना बहुत व्यवहारिक है तथा भारत में परम्परागत इसका प्रयोग होता है। मान लीजिये यदि आप स्त्रियों को साड़ी के स्थान पर कुछ और पहनने को कहे तो यह उन्हें स्वीकार्य नही होगा क्योंकि उनके विचार में साड़ी सौन्दर्य तथा स्त्रीतत्व वृद्धि करती है। भारतीय ग्रामीण स्त्रीयां इसमें कोई परिवर्तन नही करेगी। वे परम्परावश विवेक की उस अवस्था तक पहुंच चुकी है कि विदेशों से आये फैशन उन्हें प्रभावित नही कर सकते। पश्चिमी देशों में थोड़ा बहुत बाकी का विवेक भी बाहर जा रहा है। सारे लोग पॉप तथा

तथा हिला देने वाले भयंकर शोर-शराबे के संगीत में एकत्र हो जाते है। ऐसा शोर जो आपके कानों में घुसकर आपके कानों को बहरा कर दें। इस प्रकार के कार्य विवेकहीनता है। हर समय वे किसी न किसी प्रकार की उत्तेजना चाहते है। मुझे बताया गया है कि लोग यहां बर्फ फिसलन के लिये आते है और मैनें लोगों को पैराशूट से कूदते हुये भी देखा है। एक भारतीय जानता है कि किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा उसका शरीर अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह सब उत्तेजना क्यों? बहुत से लोग इसके लिये अपने अंग तथा जीवन तक से हाथ धो बैठें। विवेकहीनता लोगों के लिये इस प्रकार की उत्तेजना का बहुत आकर्षण होता है। विवेकशील व्यक्ति इस प्रकार की मूर्खतापूर्ण कार्य नही करते।

श्री गणेश शिशु होते हुये भी विवेक के दाता है। अतः हम कह सकते है कि विवेक मार्ग पर चलाये जाने पर बच्चे ही विवेक के दाता है। कितने विवेक से वे बातचीत करते है। उनमें से कुछ तो मुझे पूर्ण विश्वास में लेकर आप लोगों की गतिविधियों के विषय में बताते है। शिशु विहीन जगत पुष्प विहीन मरुस्थल सम होता है। श्री गणेश ने आपकी रचना की, उन्ही के कृपा से आप उत्पन्न हुये और मां के गर्भ में उन्होनें ही आपकी रक्षा की। उपयुक्त समय पर आपके अवतरण का दायित्व भी उन्हीं का था। आपका पोषण तथा मस्तिष्क विकास भी उन्होनें ही किया। एक सरल ग्रामीण व्यक्ति अत्यन्त व्यवहारिक तथा विवेकशील होता है। एक बार एक साध ग्रामीण व्यक्ति कुछ तेज तर्रार लड़कों के साथ रेलगाड़ी में यात्रा कर रहा था। ग्रामीण को तंग करने के लिये एक लड़के ने प्रश्न किया कि यदि मक्खन चौथाई पाउन्ड की दर पर बिक रहा हो तो अगले स्टेशन पर अन्डे का क्या मूल्य होगा? और यदि आप अन्डे का मूल्य नही बता सकते तो कम से कम मेरी उम्र ही बता दीजये। "तुम बाईस वर्ष के होगें" ग्रामीण ने कहा। लड़के ने पूछा "आप कैसे जानते है"? ग्रामीण ने उत्तर दिया कि मेरा एक ग्यारह वर्ष का भाई है जो कि आधा पागल है और तुम तो पूरे पागल हो। अबोधिता के सन्मुख सारी चुस्ती और चालाकी मात खा जाती है। बहुत से लोगों में ये भावना है कि हम अपनी अबोधिता को खो चुके है। अबोधिता एक आन्तरिक गुण है, जिसे हम कभी नही खोते। जिस प्रकार बादल पूरे आकाश को आच्छादित कर लेते है उसी प्रकार आपके अहम बन्धनों और त्रुटियों के बाबजूद भी अबोधिता सदैव विद्यमान रहती है। आपको केवल इसका सम्मान करना होता है तथा इसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुये आचरण करना होता है। अबोधिता के इस गुण को लज्जाजनक न माने । अबोधिता स्वयं ही विवेक प्रदान करने वाली एक शक्ति है जिसके द्वारा सुगमता से आप अपनी समस्याएं सुलझा सकते है।

गहन रूप में यदि आप देखें तो श्री गणेश आदि शक्ति मां के बच्चे है। आदि शक्ति मां ओकांर से इनकी रचना करती है। "ओकांर" ही "शब्द" है। यह प्रथम शब्द है जब सदाशिव और आदि शक्ति सृष्टि रचना हेतु अलग हुये। उस ध्वनि को ओंकार रूप में प्रयोग किया गया, ओंकार अर्थात प्रकाशपूर्ण चैतन्य लहरियां। उनके दायें भाग में सभी तत्वों के अणु है और बायें भाग में मनोभाव। इसके मध्य में आपके उत्थान की शक्ति निहित है। वह विनोदशील है। शिशु कभी अत्याचारी नही होते। श्री गणेश भी अत्याचारी नही है। परन्तु यदि मां के विरुद्ध कोई कार्य किया जाये तो वे भड़क कर अपराधी को दण्ड देते है और इस तरह से दैवी न्याय मानव तक पहंचता है।

यदि हम श्री गणेश के प्रति समर्पण कर दे तो वे हमारी रक्षा करते है तथा विवेक, उचित सूझबुझ तथा मां की मर्यादा प्रदान करते है। आदि शक्ति मां के अतिरिक्त वे किसी अन्य देवता को नही जानते। वे जानते है कि उनसे अधिक शक्तिशाली कोई भी देवता नही। यही उनका विवेक है और प्रार्थना के समय आप भी इसे आत्मसात कर ले।

पाश्चम में अभी भी बहुत से लोग दूसरों की नकल करने के इच्छुक है। वे गलत विचारों में फंस कर सत्य से वंचित रह जाते है। ईश्वर की कृपा से आप सब इन बन्धनों से मुक्त हो गये हो। अब आप देखिये कि पाश्चमी समाज किस तरह नर्क में फंस गया है। इसको समझने का प्रयत्न करते हुये आप स्वयं को एक पूर्णतया भिन्न अवस्था में पाकर उस अवस्था का आन्नद लीजीये। परन्तु अभी भी आपके बीच कुछ ऐसे लोग होगें जो बन्धनों के झूले पर सवार है। इस तरह के अस्थिर लोगो को बाहर फैकने का प्रयत्न कीजीये, सहानुभूतिवश उन्हें अन्दर घसीटने का प्रयत्न न कीजीये। यदि आप उनसे सहानुभूति करते है तो उनके साथ आपका भी पतन हो जायेगा। उनकी त्रुटियां उन्हें बता देना उन्हें पीड़ित तो करेंगा परन्तु इस प्रकार उन्हें बचाया जा सकेगा। विश्व में आप उद्धारक के रूप में है। श्री गणेश की शक्ति आप में विद्यमान है, आपको इसका प्रयोग करना है।

अपने हृदय में श्री गणेश से दया, करूणा तथा क्षमा की याचना करते हुये उनसे अपने अन्तस में प्रकट होने की प्रार्थना करते हुये विशेषतया उनकी पूजा कीजीये। आइये हम सब अपने पूर्व पाखन्डो, बंधनों, दुर्शविचारों तथा दोषपूर्ण जीवन को वायु विलीन हो जाने दे तथा अपनी अबोधता की कोमल तथा सुन्दर चांदनी को प्रकट अपने अन्तस से प्रवाहित होने दे। आईये हम इन गुणों को उद्घाटित करे।

दैवी शक्ति से परिपूर्ण देश आसद्या में आज हम लोग है। कटटरपन के अभाव के कारण यह देश अत्यंत अद्भूत है। अपनी सामान्य आंखों से ही दैवी कृपा की वर्षा हम देख सकते है। वर्षा की स्थिती न होते हुये भी आज दैवी कृपा को हम देख सकें।

निष्कपट बनने का प्रयत्न कीजीये। चातुर्य हमारे लिये आवश्यक नही। चातुर्य आपका मानसिक दृष्टिकोण है तथा अबोधता आपका अन्तःजात गुण है जो कि सर्वत्र व्याप्त शक्ति से सम्बद्ध है। ईश्वर आपको धन्य करें।

श्री कृष्ण पूजा वार्ता

सायंकालीन

इपोविक (इंगलैंड) 19-8-90

श्री विष्णु की विकास प्रक्रिया से किस प्रकार सब कुछ विकसीत हुआ? हमें इसका ज्ञान होना चाहिए। श्री विष्णु के दस अवतार हैं। श्री विष्णु बढ़ कर विराट, ब्रह्मांड रूप धारण करते हैं। हमारे अंदर विष्णु तत्व की स्थापना अति सुन्दर रूप से है। इसी के परिणाम स्वरूप हम धन, सत्ता, प्रेम, बच्चे तथा अन्य सभी प्रकार की वस्तुएं पाना चाहते हैं। विकास प्रक्रिया, जिसके कारण हम विकसित हुए, विष्णु तत्व की सबसे बड़ी देन है। सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक रूप में भी हमारा विकास हुआ। एक समय भारत स्वतंत्र देश था फिर यह परतन्त्र हो गया तथा फिर प्रजातन्त्र। अंग्रेज लोगों ने भारतियों के बहुमत को देखते हुए विवेक से कार्य लिया तथा भारत छोड़ दिया।

समस्या का सामना जब हम करने लगते हैं तो हमें पता चलता है हम स्वयं ही इसके जन्म-दाता हैं। समस्या के समझने से हमारे अन्दर विवेक जागृत होता है। हमारे मध्य स्नायु-तंत्र पर जागृती की यह घटना महानतम उपलब्धि है। विकास प्रक्रिया विवेक की रचना करती है। इसके विपरीत पशुओं में हर चीज़ अन्तःरोपित होती है। वे पशु अर्थात पाश बद्ध होते हैं। विवेक या मूर्खता को समझने के लिए उनकी कोई पृथक पहचान या व्यक्तित्व नहीं होता। विवेक, विकास की महान देन, मानव को ही प्राप्त है। प्रयास और त्रुटियों या आत्मान्वेषण के कारण प्राचीन देशों में इस विवेक का विकास हुआ। अब हम देखते हैं कि मुस्लिम देशों समेत बहुत से अन्य देश इस मूर्ख सद्दाम हुसैन का मुकाबला करने के लिए संगठित हुए हैं। हिटलर के काल में कुछ देशों ने उसका साथ दिया था और बाकी उसके विरोध में थे। अतः दो प्रकार के लोगों के होने के कारण एक विभाजन सा हो गया था।

परिस्थितियों की रचना हमारी अपनी सृष्टि तथा त्रुटियों से तो होती ही है। परमचैतन्य भी इनकी रचना करता है। अपनी मूर्खता को पहचान कर अपना दृष्टि-कोण बदलने के लिए ही आपको दीक्षित किया जाता है। विवेक एक प्रकार का प्रकाश है जो कि आपकी समझ को प्रकाशित करता है। देवताओं का विकास भी मानव-वत ही हुआ। जैसे विष्णु - मछली, मछुआ, वामन अवतार के बाद यूनानी पौराणिक कथाओं के पुरुषोत्तम - जीयस के रूप में विकसित हुए। फिर वे श्री राम के रूप में आये। वे अतयन्त विवेकशील, सतर्क, सावधान, औपचारिक तथा सुन्दर व्यक्ति थे। अपनी सारी शक्तियों को जानते हुए भी उन्हें अपना विष्णु-अवतार भूलना पड़ा। उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम बनना पड़ा। अर्थात धर्म-सीमाओं में रहते हुए मानव-आदर्श उन्हें स्थापित करना पड़ा। यह गुण आज के मानव के विपरीत है क्योंकि आज पूर्णतया मर्यादा विहीन व्यक्ति ही विश्व में सफल हैं।

ऐसे व्यक्ति का आचरण अत्याचारपूर्ण तथा हास्यास्पद होता है। संचालन कार्यों में ऐसे लोगों का महत्तव-पूर्ण स्थान प्राप्त कर लेना आश्चर्यजनक है। मानवीय-त्रुटियों के कारण ऐसा होता है क्योंकि कई बार लोग ऐसे मनुष्यों को पसन्द करने लगते हैं। परिपीड़न-शील तथा यौन-विकृत लोग भी होते है। यौन विकृत लोग अभित्रस्त होकर तथाकथित मर्यादाविहीन लोगो के प्रति श्रद्धावान हो जाते है। उनकी शारीरिक शक्ति से लोग बहुत प्रभावित होते है। एक निरंकुश शासक की ऐसी शक्ति के कारण देश दास बन सकता है। फिर कुछ ऐसी घटना होती है कि लोगों को अपनी गलती का बोध होता है। जैसे जर्मन लोगो को हिटलर की गलतियों का बोध अब हुआ है।

राजनैतिक समस्याओं की अपेक्षा रूढ़ीवादी समस्याएं अधिक है। यह रूढ़ीवाद राजनीति में भी घुस गया है। रूढ़ीवाद के डर के कारण लोग अवश्य ही इसे समाप्त कर देंगे। अल्जीरिया तथा इस्ताम्बूल के लोगो मुझसे रूढ़ीवाद को समाप्त करने की प्रार्थना की है। यह समस्या केवल मुसलमानों में न होकर हर स्थान पर है। हर धर्म में कट्टर लोग है। इसका कारण क्या है? सत्य पर आधारित न होने के कारण इसका झुकाव या तो दाएं को हो जाता है या बाएं को। दाई ओर झुकने पर यह कट्टर पंथ बन जाता है और बाई ओर के झुकाव से लोग आत्महत्या आदि अपराध करने लगते है। कट्टरवाद का मूल कारण धर्म का सत्य पर आधारित न होना है। सत्य वही है जिसे प्रस्तुत किया गया था। जैसे उस दिन टोरेन्टो में एक स्त्री भेंटकर्ता ने मुझसे पूछा "भारत में जाति प्रथा के विषय में आप क्या सोचती है"? "भंयकर अभिशाप है" मैने उत्तर दिया। उसने कहा "फिर वहां जातियां क्यों है?" मैने कहा प्रारम्भ में जाति जन्म से न होकर कार्य से होती थी। श्री राम की जीवनी बाल्मीकी ने लिखी थी जो कि सन्त बनने से पूर्व डाकू थे। वे मछुआरे थे ब्राहम्ण नहीं। पर आत्म-साक्षात्कार पाकर एक मछुआरा ब्राहम्ण बन गया। गीता के लेखक व्यास एक मछुआरिन की अवैध संतान थे। ऐसे व्यक्ति में गीता लिखने की योग्यता कैसे आ सकी? गीता में गलत बातें भर दी गयी है कि जाति का संबंध आपके जन्म से है। इसाई धर्म में ईसा ने कहा है "आपकी दृष्टि अस्वच्छ नही होनी चाहिये"। ईसा क्योंकि आज्ञा पर आरूढ़ है उन्होनें दृष्टि की ही बात करनी है। मैनें उस भेंटवार्ता से पूछा कि क्या तुम पश्चिम में एक भी ऐसा व्यक्ति दिखा सकती हो जिसकी दृष्टि पूर्णतया स्वच्छ हो।

अनुभव ही शिक्षा का स्त्रोत है। सहजयोग में सर्वप्रथम हमने दैवी शक्ति का अनुभव किया, फिर एक सुन्दर सामुहिक जीवन का अनुभव और अब वास्तव में हमें लगता है कि एक ही मां की सन्तानें हम सब एक ही परिवार के सदस्य है। हम इस सत्य को जानते हैं और हमें इस पर पूर्ण विश्वास है। हमें वह प्राप्त हुई जो कोई अन्य अवतार न दे सका। उन सबसे अधिक समय तक टिक पाना उन उपलब्धियों में से एक है। काफी कार्य हो गया है, यह सोच कर सभी अवतार

शीघ्र ही लुप्त हो गये। यहां तक कि सन्त ग्यानेश्वर जैसे व्यक्ति ने भी तेईस वर्ष की आयु में समाधि ले ली। ईसा सूली पर चढ़ गये। यदि अवतारों की यही अवस्था है कि विश्व को देखते ही वे बोरयां बिस्तर बांध कर कूच की तैयारी कर लेते हैं तो मैं समझती हूं कि मैं उन सबसे कहीं बहादुर हूं और अभी तक कार्यरत हूं। मेरा उत्तरदायित्व भी भिन्न प्रकार का है। बाकी अवतारों ने किसी को आत्म-साक्षात्कार नहीं देना होता था। उन्होनें केवल भाषण देना होता था। भाषण देकर संसार से चला जाना अति सुगम है। मैं समझती हूं "हमारी परीक्षा अत्यन्त कठिन है"। बहुत से देश सहजयोग से जुड़कर स्वयं इसका परीक्षण कर रहे हैं।

भिन्न प्रकार, स्वभाव तथा स्तर के, भिन्न प्रकार के बन्धनों तथा अहं ग्रस्त लोगों पर कार्य करना हमारी प्रथम परीक्षा है। हर बार मुझे कुछ नवीनता मिलती है। फिर भी मैनें अच्छा कार्य किया है। दूसरे गुरूओं तथा अवतारों के लिये कार्य करना अत्यन्त साधारण था क्योंकि उन्होने सत्य कार्य के लिये केवल सच्चे लोगों को ही चुना। सभी सहजयोगियों का उत्तरदायित्व उन पर न था। सभी शिष्यों को अपने परिवार, बच्चे तथा भौतिक उपलब्धियों का त्याग करना पड़ता था। यहां तक कि शंकराचार्य ने भी अपने शिष्यों को सन्यास लेने के लिये कहा। ईसा, बुद्ध, महावीर सभी के शिष्यों को सन्यास लेना पड़ा। अपने बच्चों, पत्नियों तथा दासों का बोझ अपने सिर पर लादे रखना वे न चाहते थे। इसके विपरित सहजयोग में हम यह दर्शाना चाहते हैं कि इस संसार में रह कर भी मनुष्य आत्म-साक्षात्कार पा सकता है। इसके लिए सब कुछ त्याग कर मरने के लिए हमें हिमालय पर जाने की आवश्यकता नहीं है। इसी संसार में रह कर कार्य करते हुए यही सहज योग को प्रतिष्ठित करना है। यह कठिन कार्य है फिर करूणा के गुण से हम इस कार्य में सफल हुए। करूणा के बिना हम सफल न हो पाते। जो भी प्रयत्न आप करें, अच्छे से अच्छे शिष्य भी चाहे आपके हों, जैसा भी प्रबन्ध आप कर लें - सभी कुछ असफल हो जायेगा। विवेक का प्रकाश केवल करूणा को ही प्रकाशित करता है।

विकास प्रक्रिया के मार्ग पर अग्रसर, हम सबको अपने अंदर करूणा की मात्रा को तौलना है। केवल अपने परिवार, सम्बन्धियों तथा देश के लिए ही नहीं पूरे विश्व के लिए अन्तस निहित करूणा को। दूसरी बात जो हमें जाननी है वह यह है कि जितने भी अन्य लोग पृथ्वी पर आये किसी ने भी अपने देवत्व का कोई पक्का प्रमाण नहीं दिया। परन्तु मेरे, आपके अपने तथा सवर्त्र व्यापक शक्ति के देवत्व का प्रमाण आपको प्राप्त हो गया है। आपने फोटोग्राफ तो देखे ही है। कि प्रकार अदृष्य जगत में कार्य हो रहे हैं। जो वस्तुएं दृष्टि से दिखाई नहीं पड़ती उन्हें कैमरा पकड़ रहा है। इसके बावजूद भी इस विकास प्रक्रिया का परीक्षण हमारे अन्तस में होना

चाहिये और यह प्रक्रिया हमारी श्रद्धा का अंग प्रत्यंग बन जानी चाहिये। यह अन्धविश्वास न होकर ऐसा विश्वास है जैसे आप फूलों को देखते हैं। फूल देखकर भी यदि आप उनके अस्तित्व को नकारना चाहें तो हम यह कहेंगे कि पागल न होते हुये भी आप पागल होने का ढोंग कर रहे हैं।

इस सत्य को, कि इस प्रकार का अवतरण हमारे सामने हैं, अपने व्यक्तित्व में उतार लेना मुख्य समस्या है। हम एक महत्वपूर्ण युग में उत्पन्न हुये हैं। कुंडलनी जागृति से गति प्राप्त विकास प्रक्रिया के कारण हम बहुत ऊंचे उठ गये है तथा समय और अपराध से परे अन्तरिक्ष में निवास कर रहे हैं। फिर भी हम अपनी पदवी नही ग्रहण कर रहे हैं। हमें अवश्य अपना स्थान लेना चाहिये। यद्यपि मैं बहुत सादी प्रतीत होती हूँ और बातचीत भी सादे ढंग से करती हूँ फिर भी मेरे विषय में आपके हृदय में कोई भय नही होना चाहिये। परमात्मा द्वारा आपको दी गयी शक्तियों का आपको ज्ञान होना चाहिये। आप ही वह विशेष व्यक्ति है जिसे परमात्मा के सभी वरदान प्राप्त है। निस्न्देह धन के बदले दैवी-वरदान नही मिलते। परमात्मा की करूणा ने यह सोचकर आपको यह उपहार दिया है कि आपमें कोई महान कार्य करने की योग्यता है तथा आप परमात्मा की योजनाओं को कार्यान्वित करेंगे। इसी कारण आपको यह शक्ति प्रदान की गयी है।

विकास प्रक्रिया में श्री राम ने अपने जीवनकाल में ही उन सारी बातों को व्यवहारिक रूप प्रदान किया। परन्तु अभी विकास की एक और सीढ़ी की आवश्यकता थी और यह विकास श्री कृष्ण के रूप में, श्री विष्णु के सम्पूर्ण अवतार द्वारा हुआ। कृष्ण का पूर्ण रूप क्या है? उनका यह कथन कि पूरा विश्व एक लीला है और आपको चीजों के विषय में गम्भीर नहीं होना है। परन्तु सहजयोगियों को पहले श्री राम की तरह बनना है। श्री विष्णु को भी पहले श्री राम बनना पड़ा हमारे लिए अभी तक श्री राम की ही अवस्था है। श्री राम को बहुत से त्याग करने पड़े, दुख उठाने पड़े तथा इस सीमा तक अपमान झेलना पड़ा कि उन्हें अपनी पत्नी का भी त्याग करना पड़ा और सीता के लुप्त हो जाने के कारण वे पुन एक दूसरे से न मिल सके। इतनी यातनाएं उन्हें सहनी पड़ी। मैं यह नही कह रही हूँ कि सहजयोगियों को भी यह सब यातनाएं झेलनी है। सहस्रार से ऊपर जाकर क्योंकि आपका पुनर्जन्म हुआ है अतः आपको ईसा द्वारा झेली गयी यातनाओं की चिन्ता नही करनी है।

परिवार, सुख-सुविधाएं, धन आदि सभी वरदान आपको प्राप्त है। इन वस्तुओं के लालच में यदि आप आ गये तो आप जाल में फंस सकते हैं। यदि श्री कृष्ण सम बनना चाहते है तो जीवन केवल लीला या आनन्द मात्र ही नही है। कंस को मार कर पारिवारिक तथा प्रजा

की कांठनाइयों का अन्त करने के बाद ही उन्होने कहा कि जीवन एक लीला है। इसी प्रकार हमें भी अपने अन्तस के कंस तथा अन्य राक्षसों का बध करना है। तभी हम जीवन को लीला कह सकेगें। उनके जीवन के दो पहलू थे। एक ओर तो वे गोप गोपियों के साथ लीला करते थे और दूसरी ओर बड़े बड़े कार्य। एक दिन ईर्ष्या के कारण जब इन्द्र ने सभी गोप-गोपियों को समाप्त करने के लिये उन पर प्रलयंकारी वर्षा शुरू कर दी तो सहज ही में श्री कृष्ण ने अपने हाथ पर एक पर्वत उठा लिया तथा सभी लोग उसके नीचे आ गये। इस प्रकार उन्होनें दर्शाया की सब कुछ लीला मात्र है। श्री कृष्ण अच्छी तरह जानते थे कि वे विष्णु-अवतार है और अपनी पूर्णवस्था तक पहुंच चुके है और अब उन्हें लीला की अवधारणा को स्थापित करना है। सहजयोगयों के लिये भी इसी प्रकार से, जीवन एक लीला मात्र बन रहा है।

सहजयोग की स्थापना करने का उत्तरदायित्व हम सबका है। हमें सर्व-प्रथम सहजयोग अपने अन्तस में स्थापित करना है। यदि आप प्रसन्नचित्त नही है और यदि हंसी आपके अन्तस से फूट नही पड़ती तो आपमें कोई अभाव अवश्य है जिसका तुरन्त सुधार होना आवश्यक है। देदीप्यमान मुखाकृति तथा आनन्दमय मुद्रा एक सहजयोगी की प्रथम पहचान है। आनन्द तथा प्रसन्नावस्था में होते हुये भी हमें उत्तरदायी होना चाहिये। मुझे पता चला है कि केवल पांच प्रतिशत सहजयोगी ही उत्तरदायित्व लेते है। आप सबको उत्तरदायित्व लेना चाहिये क्योंकि उत्थान का केवल यही एक मार्ग है। जीवन लीला या आनन्द कहने मात्र से आपका उत्थान नही होगा। अपनी कमियां को खोज निकालिये। आत्मावलोकन होना ही चाहिये। बहुत से लोग अपने अन्तस में झांकना ही नही चाहिये। स्वयं देखिये "मैं ऐसा क्या कर रहा हूँ"? "मुझे ऐसा करने की क्या आवश्यकता थी"? छोटी छोटी चीजों के लिए हम अति क्षुद्र हो जाते है। जैसे मुझे पता चला कि किसी एक व्यक्ति को उपहार नही मिला। ऐसा हो भी सकता है। इतने सारे लोगो में सभी को उपहार मिल जाना तो मैं चमत्कार ही मानूंगी। परमात्मा भी इसका वचन नही दे सकता। इसके लिऐ शिकायत करना या अपमानित महसूस करना उचित नही। लहरियो का वास्तविक उपहार तो आप पा ही रहे है। अतः इस निम्न-स्तर से आपको ऊंचा उठना है। इस स्तर के लोग बड़ी क्षुद्र बातें कहते हैं। अच्छे बनिये और अच्छाई के लिये कार्य कीजिये क्योंकि बुरा बनना तो अति सुगम है। जिस भी क्षुद्र व्यक्ति को हम देखते हैं उसीका अनुसरण आरम्भ कर देते है। हमें अपने से उच्चावस्था के लोगो का अनुसरण करना चाहिये।

यदि आप मेरे अनुयायी है तो आपको ऊपर उठना होगा। क्षुद्रता के पीछे आप कैसे जा सकते है? सहजयोग के विस्तार, पूर्णावलोकन तथा दिव्य-दर्शन को आपने समझना है। सहजयोग क्षितिज से भी परे है। आपका सौभाग्य है कि आप सहजयोग के लिये कार्य कर रहे

हैं। इसकी स्थापना करने की शक्त आप में है। इस विशेष कार्य के लिये आपको चुना गया है। अवलोकन कीजये कि आप क्या है। आत्म-दर्शन करने के उपरान्त अपनी भूमिका इस दिव्य कार्य में जब आप देखेंगे तो मुझे कुछ कहने की आवश्यकता न रहेगी। आप स्वंय कहेंगे "माँ आप ही सभी कुछ कर रही है, हमारे बिना कुछ किये सब हो रहा है।" अपने हृदय में आप इस तरह सोचने लगते है और जब जब भी कोई कार्य करते है इसका आनन्द आप प्राप्त करते है। स्वयं को यंत्र मात्र मानते हुये जब आप कहने लगते है "मैं इसका आनन्द ले रहा हूँ, मैं कुछ नही कर रहा, श्री माता जी ही कर रही है", तब आप समझ पाते है कि आपके अन्दर विवेक जाग उठा है। विवेक आपको प्रकाश प्रदान करता है। उस प्रकाश में आप समझ पायेगें कि लीला क्या है, हमने आत्मानन्द कैसे लेना है तथा हमें दैवी कार्य को करने के लिये चुना गया है।

कीचड़ में से हमे कमल सम लोगो की रचना करनी है। उदार, सुन्दर तथा सुगन्धित कमल हमें बनना है। परमाप्मा से मिल उपहार का ज्ञान हमें होना चाहिये। श्री कृष्ण की शक्त जब आप प्राप्त कर लेते है तो जीवन, लीला प्रतीत होने लगता है। आप में जब यह शक्त्यां आ जाती है तो आप अपने सद्गुणों का आनन्द लेते है तथा दूसरे लोगो तक भी इसका प्रसार करत है। आपको देख लोगो को लगता है कि आपसे सीखने तथा जानने के लिये कुछ विशेष है। अपने चहुँ ओर फैली उत्तेजना (अशांत) को देखते हुये हमें आत्म-विवेक द्वारा इससे उपर उठना है। "ईश्वर आपको आशिष प्रदान करें"

परम पूज्य श्री माता जी निर्मला देवी द्वारा

श्री कृष्ण वार्ता

इपेविक - इंग्लैंड,

19 अगस्त 1990

हमने विशेष रूप से इंग्लैंड में ही इस पूजा का आयोजन किया है ताकि अधिक से अधिक सहजयोगी आकर अपने में श्री कृष्ण तत्व की जागृति का कार्य कर सके। गीता बहुत समय पूर्व लिखी गयी। इसका विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ तथा इस पर बहुत सी आलोचनाएं, व्याख्याएं और टीकाएं लिखी गयी । गीता के इस दुष्प्रयोग ने बहुत से लोगों को भ्रमित कर दिया। आज भी लोग इसे केवल पुस्तकीय ज्ञान के रूप में मानकर इसके व्यवसाय में लगे हुये है।

धर्म वास्तव में मानव के ऊर्ध्वमुखी होने में सहायक है लेकिन श्री कृष्ण के कहे गये शब्दो को बड़े ही भ्रमपूर्ण तरीके से टीकाओं में प्रस्तुत किया गया है। श्री कृष्ण का यह कथन आधुनिक सन्दर्भ में पूर्ण रूप से सत्य उतरता है कि जब जब धर्म का हरास होता है और जब जब सन्तों को सताया जाता है मैं सन्तों को बचाने, राक्षसों तथा नकारात्मक शक्तियो को समाप्त करने के लिये इस पृथ्वी पर आता हूँ। श्री कृष्ण तत्तव की यह जागृति हमारे अन्तस: में होती अत्यन्त आवश्यक है अर्थात हमें उनके गुणों की जागृति एवं अनुगमन अपने अन्तस में करना है तभी हमारी शक्तियां उचित प्रयोजन के प्रति कार्यरत होगी।

अपने बाल्यकाल में श्री कृष्ण ने बहुत से राक्षसों का वध किया। तत्पश्चात वे गोप और गोपियों की कुंडलनी जागरण के लिये उनके साथ खेले और उनमें श्री राधा की शक्ति को रास के द्वारा प्रवाहित किया। उन्होनें अपने मामा कंस का वध किया जो सबसे दुष्ट राक्षस था। तात्पर्य यह है कि यदि सम्बन्धी दुष्ट अथवा राक्षसी प्रवृति के है तो उन्हें भी मारा जाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि सहजयोग में किसी भी बुरे सम्बन्धी को बचाना या उनकी बुराई पर पर्दा डालना अनुचित है।

समस्त संसार में सहजयोग के समान कोई अन्य मार्ग नही है। यह न केवल दुष्टों को सहजयोग छोड़ देने की अनुमति देता है अपितु आवश्यकता पड़ने पर उन्हें सहजयोग से बाहर फेंक देता है। कारण यह है कि सहजयोग दैविक नियमों से आबद्ध है तथा इसे इन नियमों से बंधे रहना है। श्री कृष्ण की कार्यशैली यह थी कि बाहर फेंकने के बजाय दुष्टों को समाप्त ही कर दिया

जाए। अतः उन्होंने अपने मामा का वध किया। लेकिन सहजयोग में हम दुष्ट तथा हमारे उत्थान-अवरोधक, ईश्वर तथा आध्यात्मकता विरोधी लोगों को भी अवसर देते हैं। स्वयं के विनाश के लिए उन्हें पर्याप्त छूट दी जाती है। यह श्री माता जी के अवतार का मातृ-सुलभ पक्ष है। परन्तु श्री कृष्ण के पक्ष में अत्यधिक आवेग है। श्री कृष्ण बहुत लम्बे समय तक नहीं रहे और उन्होंने थोड़े समय में ही बहुत से राक्षसों का वध किया। वे पांडव पक्ष से लड़े उन्होंने कौरवों को मारा यद्यपि उनका कथन यह था कि उन्होंने कौरवों को नहीं मारा।

श्री कृष्ण की कार्य शैली एक ओर तो मधु के समान अत्यन्त मधुर थी और इसी कारण उनके कृपाकांक्षी उन्हें माधव के नाम से पुकारते हैं। परन्तु दुष्ट व्यक्तियों के लिए उनका व्यक्तित्व अत्यधिक भयंकर था। वास्तव में शिव ने भी ऐसा ही किया। शिव और शक्ति ने बहुत से राक्षसों का वध किया। शक्ति ने बहुत से युद्ध किए उन्होंने बहुत से तर्क वितर्क और वाद-विवाद किए लेकिन श्री कृष्ण ने कभी वाद-विवाद नहीं किया। वे राक्षसों से एक के बाद एक छुटकारा प्राप्त करना जानते थे। उन्होंने उनसे बहुत सी चाल भी खेली। एक दुष्ट राक्षस जो बहुत से लोगों को सताता था श्री कृष्ण ने उससे युद्ध किया एक चाल चली। श्री कृष्ण एक गुफा में प्रविष्ट हुए। यहां एक संत सो रहा था। संत को शिव से यह वरदान प्राप्त था जो भी उसकी निद्रा को भंग करे वह राख में परिवर्तित हो जाए। श्री कृष्ण ने अपनी शाल ली और धीरे से उस संत पर डाल दी और स्वयं को छुपा लिया। राक्षस गुफा में प्रविष्ट हुआ और सोए हुए संत को कृष्ण समझ कर उन पर लात से प्रहार किया। संत उठ खड़े हुए और जैसे ही उन्होंने अपने तृतीय नेत्र से राक्षस को देखा वह राख हो गया। यह कृष्ण की चाल थी।

एक बार कंस के द्वारा एक राक्षसी स्त्री बालक कृष्ण का वध करने भेजा गया। उसने अपनी छाती पर विष लगा लिया और बालक कृष्ण को दूध पिलाना प्रारम्भ किया। श्री कृष्ण ने जैसे-जैसे दुग्ध पान करना प्रारम्भ किया उसकी छाती विकसित होती चली गई और वह समाप्त हो गई। एक अन्य अवसर पर वे जानते थे कि दो राक्षसों ने दो बड़े वृक्षों का रूप धारण कर रखा था। श्री कृष्ण की मां ने उनके मक्खन चुराने पर एक बहुत बड़े मूसल से उन्हें बांध दिया। जब वह चली गई तब श्री कृष्ण अपने छोटे-छोटे पैरों से गए और दोनों पेड़ों को इस मूसल से ठोकर मारी। पेड़ गिर गए और राक्षस समाप्त हो गए।

श्री कृष्ण इतने चतुर और ज्ञानगम्य हैं क्योंकि वह बुद्धरूप हैं। वह विराट हैं। उनका समस्त प्रेम, करुणा और सुन्दरता, गोप और गोपी मात्र के लिए थी। राजा के रूप में उनका जीवन समझ से परे और रहस्यपूर्ण रहा लेकिन सहज योगी समझ सकते हैं। जब वे राजा बने उन्हें विवाह करना पड़ा। उन्होंने पांच विवाह किये। वे पांच विवाह वास्तव में पांच तत्वों के परिणामस्वरूप

थे। श्री कृष्ण जी के पास सोलह हजार शक्तियां थी। यदि एक व्यक्ति लगभग 90 वर्ष का होकर किसी स्त्री को अपने पास रखना चाहता है लोग उसे बुरा कहते हैं। भारत में कब्र में लटके हुए व्यक्ति की भी यदि कोई स्त्री मदद करती है तो लोग कहते हैं इनके परस्पर बुरे सम्बन्ध थे। ऐसी स्थिति में श्री कृष्ण स्वयं को बदनाम नहीं करना चाहते थे अतः उन्होंने सोचा इन शक्तियों का क्या किया जाए क्योंकि उन्हें तो स्त्री रूप में अवतारित होना पड़ेगा। वे सोलह हजार राजकुमारियां बन गई और एक राजा ने उनका हरण कर लिया और जब राजा इन नारियों को दूषित करना चाहता था श्री कृष्ण ने आक्रमण करके सोलह हजार राजकुमारियों को मुक्त करा दिया। उन्हें अपने साथ ले आए और उनसे नियमानुसार विवाह किया। वास्तव में यह विवाह तो उनका अपनी शक्ति से वरण था।

श्री कृष्ण ने उन शक्तियों का प्रयोग विभिन्न वस्तुओं के सृजन में किया। यदि कृष्ण अवतारित न हुए होते तो हमें आध्यात्मिक जीवन का ज्ञान न हुआ होता। यद्यपि संतों और दृष्टाओं के माध्यम से लोगों को आध्यात्मिक जीवन का ज्ञान हुआ लेकिन किसी अवतार ने इसके बारे में बात नहीं की। वामन, परशुराम अवतार आदि हुए लेकिन कोई भी आध्यात्मिक जीवन के बारे में नहीं बोला। पहली बार श्री कृष्ण ने केवल अर्जुन को आध्यात्मिक जीवन के विषय में बताया। उन दिनों लोग आध्यात्मिकता को जानने की अवस्था में न थे। जो सहजयोगी बाधाओं, समस्याओं तथा पर्याप्त जिज्ञासुओं के अभाव के कारण निराश हो जाते हैं उन्हें अवश्य जान लेना चाहिए कि श्री कृष्ण में केवल एक व्यक्ति को आध्यात्मिक ज्ञान देने का साहस था।

श्री कृष्ण के बाद ईसा ने आध्यात्मिकता के विषय में बताने का नेतृत्व लिया। अब्राहम और मोजिज भी इसके विषय में कुछ न बता पाये। उन्होंने ईश्वर के विषय में बताया, आध्यात्मिकता के विषय में नहीं। ईसा के अवतरण से पूर्व किसी ने यह नहीं कहा कि आपको पुर्नजन्म लेना है। केवल श्री कृष्ण ने यह बात कही। श्री राम ने अपने गुरू से कुण्डलनी ज्ञान सीखा परन्तु तब यह गुप्त विज्ञान था। जिसका ज्ञान कुछ गिने चुने लोगों को दिया जाता था। उसकी तुलना में हम सोचें कि हममें से कितने लोगों को पर्याप्त आध्यात्मिक ज्ञान है। अपनी आध्यात्मिकता का हम न केवल अनुभव करते हैं, हम स्वयं आध्यात्मिक हैं। अवसर का नियम यदि हम इस पर लागू करें तो ईसा के "मैं नहीं सोचती" ईसा के बाद इतने लोग भी हो सकते हैं। श्री कृष्ण और ईसा के समय के बीच में §6000§ हजारों वर्षों में कृष्ण का केवल एक शिष्य था। ईसा के 12 शिष्य बने। हमें पता होना चाहिए कि अब नया धमाका हुआ है। इसी कारण मैं इसे बसन्त का समय कहती हूं। हम निसंदेह आध्यात्मिक भोग हैं। इसमें आध्यात्मिकता है और दैवी शक्ति कार्यरत है। इसी कारण कलयुग का अंत होकर अब कृतयुग है।

कृतयुग की कार्यशैली ने हमें इतने अधिक सहजयोगी दिये हैं। कृतयुग अर्थात वह समय जब सर्वत्र व्याप्त शक्ति ने कार्य शुरू कर दिया हो। आज से पूर्व किसी को भी शीतल लहरियों का अनुभव नहीं हुआ था। उन्हें शीतलता का अनुभव तो हुआ परन्तु लहरियों का नहीं। विशेषतया इसकी सम्बद्धता शरीर विज्ञान से कभी नहीं की गई। सहजयोग की उपलब्धि आश्चर्यजनक है। युगों की कार्यशैली में विकास प्रक्रिया का भी योगदान है। इसके कारण सर्वत्र व्याप्त शक्ति ने पृथ्वी पर लोहे के रूप में कार्य करना शुरू किया। कोई भी व्यक्ति यह प्रश्न कर सकता है कि माँ इससे पहले आप क्यों नहीं अवतरित हुई। क्योंकि समय परिपक्व न था। आज भी पश्चिमी देशों में विवेकशील लोगों की संख्या बहुत कम है। विनाश तथा अन्य छोटी-छोटी घटनाओं की चिन्ता मत कीजिये। अब सहजयोगी की उन्नति होगी, यह फले फूलेगा। लोग जो भी कहते रहें आप उसकी चिन्ता मत कीजिये क्योंकि एक बार जब उन्हें आनन्द, प्रसन्नता तथा सत्य की प्राप्ति हो जायेगी तो, यदि वे ईमानदार है, वे सहजयोग नहीं छोड़ेंगे। मान लीजिये पति-पत्नि में से कोई एक यदि दुश्चरित्र है और दूसरे के सहजयोग में जाने में बाधा उत्पन्न करता है तो उसे साफ शब्दों में सहजयोग छोड़ने से इंकार कर देना चाहिए, क्योंकि उसने सहजयोग के अद्भुत सुन्दरता तथा आनन्द की अनुभूति की है। श्री कृष्ण युद्ध के मैदान में अपने विराट रूप में प्रकट हुए परन्तु अपना वह रूप अर्जुन के अतिरिक्त किसी को नहीं दिखाया। परन्तु आज, यदि आप अपनी आँखों से नहीं देख सकते तो भी आपके पास ऐसे फोटो हैं, जिनमें आप विराट रूप देख सकते हैं। कुछ लोग अपनी आँखों से भी यह रूप देख सकते हैं और वे इसका अनुभव कर रहे हैं। आप विकसित हो रहे हैं और इसमें बढ़ रहे हैं। यह एक नया साम्राज्य है और श्री कृष्ण ने ही इसके विषय में बताना आरम्भ किया। नाथ-पंथियों का विश्वास भी आध्यात्मिकता में था परन्तु संत ज्ञानेश्वर से पहले उन्होंने भी कभी इसके विषय में बात नहीं की। इसके रहस्य बन जाने से पूर्व मोहम्मद साहब, गुरु नानकदेव जी, शिरडी साईनाथ तथा कुछ अन्य सूफी संतों ने आध्यात्मिकता के विषय में बताना शुरू किया।

ऐतिहासिक दृष्टि से हमें श्री कृष्ण जी के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये कि उन्होंने पहली गांठ खोली। यही कारण है कि इसे विष्णु ग्रन्थी कहते हैं। श्री कृष्ण चाहते थे कि इसका ज्ञान धीरे-धीरे उद्घाटित किया जाये। अतः उनकी गीता सुस्पष्ट न होकर कूटनीतिक प्रकटन था। गीता को स्पष्ट करने का प्रथम प्रयत्न ज्ञानदेव जी ने किया और गीता के छठे अध्याय में कुंडलनी के विषय में लिखा। परन्तु कुंडलनी जागरण की योग्यता के अभाव में धर्म के ठेकेदारों ने ग्यानेश्वरी के छठे अध्याय के पढ़ने पर प्रतिबंध लगा दिया। लोगों को झूठ-मूठ से कुंडलनी के विषय में डरा कर उन्हें इस विषय में न पढ़ने के लिए कहा गया। अतः पश्चिम में आध्यात्मिकता का परिचय ही न हो सका। यद्यपि ईसा का अवतरण हुआ परन्तु उन्हें बलिदान होना पड़ा। ईसाई मत में किसी भी अपराध के बावजूद भी व्यक्ति ईसाई ही रहता है। मैं एक खूनी को जानती हूं जिससे न्यायालय में जब परिचय पूछा गया तो उसने उत्तर दिया "मैं एक ईसाई हूं।" तब बाइबल पर हाथ रख

कर उसे यही वाक्य दोहराने के लिए कहा गया और उसने फिर कहा "मैं एक ईसाई हूं"। उससे यह क्यों नहीं पूछा गया कि "तुमने खून क्यों किया?" "आप हत्या नहीं करेंगे" ईसा ने कहा। धर्म बनाने वालों ने अधार्मियों को धर्म तथा समाज से बाहर कर देने के लिए नियम नहीं बनाए। इसके विपरीत मेरे पिताजी जब अंग्रेजों से लड़ने के लिए कांग्रेस के सदस्य बने तो ईसाई धर्म प्रचारकों ने उन्हें धर्म से बाहर कर दिया। उनके विचार में ईसा इंग्लैंड में पैदा हुए अतः वे भी एक अंग्रेज थे।

परमात्मा धर्म तथा आध्यात्मकता विरोधी सभी असंगत विचार बहुत प्रचलित हुए तथा इन आयोजित धर्मों के लिए बहुत ही सुगम तथा लाभकारी सिद्ध हुए। हिन्दू धर्म की सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें संगठन नाम की कोई चीज नहीं। वे बौद्ध जैन-धर्मी, नास्तिक, ईसाई या कुछ भी हो सकते हैं परन्तु वे हिन्दू भी हो सकते हैं। क्योंकि वे संगठित नहीं होते अतः वे बन्धनमुक्त होते हैं। स्वयं के प्रति उत्तरदायी होने के कारण हिन्दू अत्यन्त नम्र लोग होते हैं। हत्या करके किसी भी हिन्दू को पंडित या पादरी के सामने जाकर स्वीकार नहीं करना होता, उन्हें स्वयं ही अपने अपराध के लिए उत्तरदायी होना पड़ता है। धर्म में जाति प्रथा जैसी बहुत सी कमियां आ गई जो कि श्री कृष्ण के विचारों से विपरीत है। श्री कृष्ण के नाम पर किसी को अपराध करने का कोई अधिकार नहीं क्योंकि उनके अनुसार हर शरीर में आत्मा का निवास है। परन्तु लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि जाति जन्म से होती है। श्री कृष्ण का संदेश लोगों तक नहीं पहुंच पाया। उन्होंने कहा था कि आप विराट के अंग-प्रत्यंग है। क्या हाथ की एक कोशिका इसलिए अछूत बन जाती है क्योंकि वह मस्तिष्क में नहीं है? श्री कृष्ण के प्रति लोगों ने बहुत अन्याय किया, यही कारण है कि जब वे जातियता के शिकार होते हैं तो मैं उनसे कहती हूं कि तुमने यही विष जाति प्रथा के रूप में फैलाया है। जातिवाद से आपने हरिजनों तथा छोटी जाति के लोगों को सताया। अब जातियता आप पर दहाड़ रही है। श्री कृष्ण के जीवन का सौन्दर्य इस बात में है कि जीवन उनके लिए लीला मात्र है। उनकी इस "लीला" भाग का दुरूपयोग अमेरिका में बहुत हुआ। श्री कृष्ण की भूमि "अमेरिका" में लोगों ने लीला का अर्थ स्वेच्छाचार समझा। जितने मर्जी विवाह कीजिये, बच्चों को सड़ने के लिए छोड़ दीजिये, पशुओं की तरह व्यवहार कीजिये और कहिये "बुराई क्या है?" तो आप क्या सांप या कीड़े बनने वाले हैं? पूरा सिद्धांत ही श्री कृष्ण विरोधी हैं। कृष्ण-चेतना नामक आंदोलन मूर्ख लोगों का है जो कि गीता के रूप में पुस्तकीय ज्ञान जनतांग को बेच रहे हैं। परन्तु अब इस अपराध की प्रतिक्रिया उन पर भी होने लगी है। कृष्ण ने जीवन को लीला कहा तो आप ये कपड़े क्यों पहन रहे हैं? सन्यासी क्यों बन रहे हैं? विशिष्ट प्रकार का खाना खाने को क्यों कहते हैं? ये लोग नशीले पदार्थ सेवन करते हैं तथा उन्हें बेचते हैं। असत्य सदा विनाशात्मक है। केवल सत्य ही रचनात्मक है। ये सब विचार कई बार हमें उलझा देते हैं परमात्मा, श्री कृष्ण, ईसा तथा मोहम्मद साहब के नाम पर यह सब अपराध किये जाते हैं। "मां ने ऐसा कहा है" यह कहकर भी कुछ लोग अपराध

करते हैं। सहजयोगियों के लिए ऐसा कहना वर्जित है। इस प्रकार की बातें मैं बहुत सुन चुकी हूं। अब कोई भी यह न कहे कि "मां ने ऐसा कहा है।" अपने अंदर इतना विश्वास तथा दायित्व आईये कि आप कह सके कि "मैं कहता हूं" मैं एक सहजयोगी हूं। आप इस बात को क्यों नहीं कह सकते कि आप एक सहजयोगी हैं।

आज की पूजा के बाद हमने अपने अंतस के श्री कृष्ण को जागृत कर लिया है। आपको चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। श्री कृष्ण के माधुर्य तथा विनाश की शक्तियां कार्य करेंगी। आप पूर्णतया संरक्षित हैं। श्री कृष्ण ने कहा है "योगक्षेम वहाम्यम्"। मैं आपको योग देता हूं और फिर तुम्हारा उपकार करता हूं। श्री कृष्ण हमारी देखभाल करते है। आपको कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। हानि पहुंचाने वालों पर श्री कृष्ण की शक्ति दैवी दण्ड के रूप में टूट पड़ेगी। निसंदेह मां होने के कारण मैं किसी को भी दोंडत नहीं करना चाहती फिर भी उन्हें दण्ड मिल जाता है मैं क्या करूं? यह अत्यन्त भयानक भी हो सकती है। हमें अपने अंतस में स्वीकार करना है कि हम अत्यन्त मधुर, सुहृदय तथा सामूहिक रूप से रहेंगे। यदि आप सामूहिक गंदी है तो श्री कृष्ण आपका जीवन लेने पर उतारू हो जायेंगे। सामूहिकता को यदि आप नाश करने का प्रयत्न करेंगे तो भी यह आपके पीछे पड़ जायेंगे। वे एक भयंकर व्यक्ति हैं। वे अति चालाक, चतुर और सुगम का कार्यकर्ता है। अतः सावधान रहिये। यदि आप सामूहिक हैं तो वे आपकी शक्ति को बढ़ायेंगे, आपका पोषण करेंगे और खाने के लिए मक्खन देंगे। अतः आपको सामूहिक होना है। यही मुख्य कार्य है। केवल कार्यक्रम में आकर लुप्त हो जाने वाले व्यक्तियों को जान लेना चाहिए कि इससे कोई लाभ न होगा। आपको सामूहिक बनना है। वे लोग यदि सामूहिक नहीं होना चाहते तो हम उन्हें विवश नहीं करना चाहते। परन्तु सामूहिक हुये बिना वे सहजयोगी नहीं है और उनकी सिफारिश किसी भी सहजयोगी को नहीं करनी चाहिये। सहजयोगियों का असामूहिक और असहजयोगियों से कोई मतलब नहीं होना चाहिये। हमारे पास अति सुन्दर बच्चे परिवार तथा वस्तुएं हैं। इतने सुन्दर लोग जो एक दूसरे से प्रेम करते हैं और एक दूसरे का आनन्द लेते हैं। अतः हमें बाहर के लोगों के चक्कर में नही पड़ना चाहिये। ऐसा करना किसी सुन्दर व्यवस्थित तथा प्रकाशित स्थान से उठकर अचानक डंक मारते हुए सांपों के बीच चले जाने जैसा है। इस तरह के कार्य करने पर आप ये नहीं कहेंगे कि मां ने दोंडत किया है। आप सांपों के नर्क में जाना चाहते थे तो जाइये। मैं कभी सजा नहीं देती। परन्तु हो सकता है कि श्री कृष्ण तुम्हें वहां जाने का प्रलोभन दें। सर्पदंश का अनुभव देना, यही उनकी कार्यप्रणाली है।

श्री कृष्ण के अनुसार हमें विनोदप्रिय होना चाहिए। अब आप सब लोग आत्म साक्षात्कारी, अति प्रसन्न, विनोदशील, आनन्ददत और योग्य व्यक्ति हैं। आपमें आध्यात्मिकता है और आप दूसरों को साक्षात्कार दे सकते हैं। गांवों में भी लोग साक्षात्कार मांगते हैं। कुछ लोगों ने

पूर्वी खण्ड में जाकर 5000 लोगों को साक्षात्कार दिया। अर्जनटाईना में जाकर किसी सहजयोगी को बहुत से भोग मिल गये। यह सब मेरे हाथ में है जो बढ़ रहे हैं और कार्य हो रहा है। हर व्यक्ति को कार्य करना चाहिए। आप एक स्थान चुनिए। मैं वहां जाऊंगी और कार्य हो जाएगा। आप सब ये कार्य कर सकते हैं क्योंकि आपको शक्तियां प्राप्त हो चुकी हैं। यदि आप शक्तियों का प्रयोग नहीं करेंगे तो कुन्द हो जायेंगे। अतः अपनी शक्तियों का प्रयोग करो और विश्वास करो कि आप में शक्तियां हैं, को सहजयोग की मर्यादाओं में रहकर अत्यन्त सदाचारी पूर्ण तथा सुन्दर जीवन व्यतीत करना है। अपनी लहरियों का ठीक प्रकार से अनुभव कीजिये और अच्छा स्वास्थ्य रखिये। यह बहुत सुगम कार्य है। यदि इस आयु में भी मैं दिन रात कार्य कर सकती हूं तो आप भी कर सकते हैं। आप सब तो मुझ से कहीं छोटे हैं।

सांयकाल को ध्यान के समय आप स्वयं से पूछिये "मैंने सहजयोग के लिए क्या किया?" केवल एक यही प्रश्न। मुझ जैसा या श्री कृष्ण जैसा व्यक्ति यह महसूस भी नहीं करता कि हम कुछ कर रहे हैं। अतः हम क्या पूछ सकते हैं। यदि मैं स्वयं के बारे में सोचना चाहूं तो मैं खो जाती हूं। यह मेरे लिए संभव नहीं। परन्तु आप स्वयं को अवश्य पहचानिये। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं सोचती हूं कि जब तक मै जीवित हूं, मैं नहीं जानती, संभवतः मैं सदा जीवित रहूं। मैं सर्वदा जीवित हूं परन्तु जब तक मैं इस पृथ्वी पर हुं मैं सहजयोग को पूर्णतया सुसंस्थापित करके रहूंगी। यह मेरा आप लोगों से वायदा है। "संस्थापनार्थायः" परमात्मा न केवल धर्म को संस्थापना के लिए परन्तु विश्व निर्मल धर्म, जो कि मानव मात्र के सभी धर्मों से कहीं उच्च है, की संस्थापना के लिए बार-बार पृथ्वी पर अवतारित होते हैं। बहुत शीघ्र ही विश्व निर्मल धर्म इस पृथ्वी पर संस्थापित होगा।

परमात्मा आपको धन्य करे।

श्री हनुमान पूजा वार्ता
फ्रेंक फर्ट, 31 अगस्त 1990

मानव अस्तित्व में श्री हनुमान की महत्तवपूर्ण भूमिका है। निरन्तर हमारे स्वाधिष्ठान से मस्तिष्क तक चलते हुये वे हमारी भविष्य की योजनाओं या मानसिक गतिविधियों के लिये आवश्यक मार्गदर्शन तथा सुरक्षा प्रदान करते है। जर्मनी एक ऐसा देश है जहां के निवासी अत्यन्त चुस्त तथा उद्यमशील है। अपने शरीर का वे बहुत प्रयोग करते है और अत्यन्त यान्त्रिक है। श्री हनुमान जी से देवता का, जो कि बन्दरसम उन्नत शिशु है, निरन्तर मानव के दायें भाग में दौड़ते रहना अत्यन्त आश्चर्यजनक है। मानव के अन्तस स्थित सूर्य तत्व को शान्त तथा मृदु रखने के लिए उनसे कहा गया। जन्म के समय ही उनसे सूर्य को नियोत्रित करने के लिये कहा गया, अतः शिशु सुलभ स्वभाव से उन्होने सोचा कि सूर्य को खा ही क्यों न लिया जाये। यह सोचते हुये कि पेट के अन्दर सूर्य को अधिक अच्छी तरह से नियंत्रित किया जा सकता है, उन्होनें विराट रूप धारण करके सूर्य को निगल लिया।

मानव की दांयी तरफ को नियोत्रित रखने के लिये उनके बाल सुलभ आचरण का प्रयोग उनके चारित्र की सुन्दरता है। दाहनी तरफ के लोगों को प्रायः बच्चे उत्पन्न नही होते है। अत्यन्त उद्यमी होने के कारण, यदि उनके बच्चे हो भी जायें तो भी बच्चों के लिये समय अभाव के कारण ऐसे माता-पिता को बच्चे पसन्द नही करते। ऐसे लोग अत्यन्त कठोर होने के कारण सदा बच्चों पर चिलाते रहते है, और उनकी समझ में नही आता कि किस प्रकार बच्चों से व्यवहार करें। कभी कभी तो ये लोग यह सोचते हुये "मुझे तो यह प्रेम प्राप्त नही हुआ कम से कम मैं इसे अपने बच्चों को तो दे दूं" अपने बच्चों के प्रति अत्यन्त आसक्त हो जाते है। इन नितांत उग्र स्वभाव के व्यक्तियों में शिशु रूप में श्री हनुमान जी विद्यमान रहते है। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम जी के कार्य करने को हनुमान जी अत्यन्त उत्सुक रहते है। श्री राम सुकरात वर्णित परोपकारी राजा थे, उन्हें अपनी सहायता के लिये किसी सचिव की आवश्यकता थी और इस कार्य के लिये श्री हनुमान जी की रचना हुई। श्री हनुमान श्री राम के ऐसे सहायक और दास थे और उनके प्रति इतने समर्पित थे कि कोई अन्य दास अपने स्वामी के प्रति नही हो सकता। उनके समर्पण के फलस्वरूप ही शारीरिक रूप से विकसित होने से पूर्व ही उन्हें नव-सिद्धियां प्राप्त हो गयीं। इन सिद्धियों के फलस्वरूप उनमें सूक्ष्म या पर्वतसम विशालकाय शरीर धारण करने की क्षमता प्राप्त हो गयी। अत्यन्त उग्र स्वभाव के व्यक्तियों को श्री हनुमान इन सिद्धियों से नियोत्रित

करते है। जीवन में द्रीव गति से दौड़ते हुये व्यक्ति को आप किस प्रकार नियोत्रित करेंगे? श्री हनुमान जी ऐसे व्यक्ति की रचना इस प्रकार करते हैं कि उसे अपनी गति धीमी करनी ही पड़ती है। वे ऐसे व्यक्ति के पैर या हाथ अत्यन्त भारी बना देते है जिससे कि वह व्यक्ति अधिक कार्य न कर सकें। दाहनी ओर झुके उग्र व्यक्ति को वे अत्यन्त अधिक अकर्मण्य करने वाली तन्द्रा भी दे सकते है।

अपनी पूंछ को किसी भी हद तक बढ़ाकर लोगो को नियोत्रित करना उनकी एक ओर सिद्ध है। आप सब कहते है कि सभी बन्दर चालें उनमें है। वे हवा में उड़ सकते है और इतना विशाल रूप धारण कर सकते है कि उनके शरीर द्वारा स्थानांतरित हवा का भार उनके शरीर के भार से कहीं अधिक होता है। यह आर्कीमडीज के सिद्धान्त की तरह से है। वे इतने विशालकाय बन जाते है कि उनका शरीर नाव की तरह से हवा में तैरने लगता है। हवा में उड़ने की सामर्थ्य के कारण वे संदेश को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचा सकते है।

आकाश की सूक्ष्मता श्री हनुमान के नियंत्रण में है। वे इस सूक्ष्मता के स्वामी है और इसी के माध्यम से वे संदेश भेजते है। दूरदर्शन, आकाशवाणी तथा ध्वनिवर्धन उनकी इसी शक्ति की देन है। बिना किसी संयोजक के आकाश मार्ग से वायवीय (ईथोरय) सम्बन्ध स्थापित करना इस महान अभियन्ता (श्री हनुमान) का ही कार्य है। यह कार्य इतना पूर्ण है कि आप इसमें कोई त्रुटि नही निकाल सकते। आपके यंत्रों में त्रुटि हो सकती है श्री हनुमान की कार्यपूर्णता में नही। वैज्ञानिक जब इन चीजों की खोज करते है तो वे सोचते है कि ये प्रकृति में विद्यमान है परन्तु वे यह कभी नही सोचते कि ऐसा किस प्रकार हो सकता है। वे यह मानकर चलते है कि श्री हनुमान जी ने सारे तन्त्र की रचना करके उसके माध्यम से यह कार्य किया है। यहां तक कि हमारे अन्दर की सूक्ष्म चैतन्य लहरियों का हमारे स्नायु के अणुओं पर अनुभव होना भी श्री हनुमान जी कृपा से है।

श्री हनुमान को अणिमा नामक एक अन्य सिद्धि भी प्राप्त है। जो उन्हें अणुओं तथा परमाणुओं में प्रवेश करने की शक्ति प्रदान करती है। बहुत से वैज्ञानिक सोचते है कि आधुनिक युग में ही उन्होनें अणु परमाणुओं की खोज की है परन्तमु अणु परमाणुओं का वर्णन हमारे धर्मग्रन्थों में भी पाया जाता है। विद्युत-चुम्बकीय शक्तियों का कार्यरत होना श्री हनुमान जी की कृपा से ही होता

है। श्री गणेश ने उनके अन्दर चुम्बकीय शक्ति भर दी है। वे स्वयं चुम्बक है। भौतिक सतह पर विद्युत चुम्बकीय शक्ति हनुमान जी की शक्ति है। परन्तु द्रव्य से वे मस्तष्क तक जाते है। स्वाधिष्ठान से उठकर मस्तष्क तक जाते है। मस्तष्क के अन्दर वे इसके भिन्न पक्षों के सह सम्बन्धों को सृजन करते है। याद श्री गणेश हमें विवेक प्रदान करते है तो श्री हनुमान हमें सोचने की शक्ति देते है।

बुरे विचारों से बचाने के लिये वे हमारी रक्षा करते है। श्री गणेश जी हमें विवेक देते है तो श्री हनुमान जी अन्तःकरण। विवेकशीलता के लिये अन्तःकरण आवश्यक नही क्योंकि आप बुद्धमान है, आप जानते है क्या अच्छा है क्या बुरा। परन्तु एक व्यक्तित्व को जब नियोत्रत करना हो तो अन्तःकरण आवश्यक है क्योंकि यह नियोत्रण हनुमान जी से आता है। मानव के अन्दर अन्तःकरण हनुमान जी ही है। अन्तःकरण उनकी दी हुई सूक्ष्म शक्ति है और यह हमें सद असद, विवेक बुद्ध अर्थात असत्य में भेद जानने का विवेक प्रदान करती है। सहजयोग प्रणाली में हम कहते हैं कि श्री गणेश अध्यक्ष है या इस विश्वविद्यालय के कुलपति है। वे हमें उपाधियां देते है और हमें अपनी अवस्था की गहराई जानने में सहायता करते है। वह हमें निर्विचार तथा निर्विकल्प समाधि और आनन्द प्रदान करते है। परन्तु बौद्धिक सूझबूझ जैसे "यह अच्छा है", "यह हमारे हित में है", "श्री हनुमान जी की" देन है और बौद्धिक होने के कारण, पाश्चात्य लोगो के लिये बहुत महत्तवपूर्ण है क्योंकि बौद्धिकता के बिना तो उनकी समझ में ही कुछ न आता। श्री हनुमान के बिना यदि आप सन्त बन भी जायें तो आप इस अवस्था का आनन्द तो प्राप्त कर लेंगे परन्तु यह नही समझ सकेंगे कि यह सन्तावस्था ठीक है या गलत, आपका हिमालय पर रहना ठीक है या लोगो को सक्षात्कार देने के लिये जाना। यह सब विवेक, मार्गदर्शन तथा सुरक्षा हमें श्री हनुमान जी की देन है। जर्मनी, क्योंकि दायें भाग का सार है। अतः श्री हनुमान जी की पूजा द्वारा दायें भाग की सुरक्षा प्रदाना करना यहां अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु इसे सारी विवेक बुद्ध के बावजूद भी श्री हनुमान जी जानते है कि वे पूर्णतः श्री राम के आज्ञाकारी सेवक है। श्री राम कौन है? वे परोपकारी राजा है जो परोपकार के लिये कार्य करते है और स्वयं एक औपचारिक व्यक्ति है। अत्यन्त संतुलित पुरूष श्री राम स्वयं बहुत आगे नही बढ़ते। श्री हनुमान सदैव उनका कार्य करने के लिये उत्सुक रहते है। विवेक यह है कि जो कुछ भी श्री राम

कहते है श्री हनुमान उसे कर देते है। गुरू शिष्य के संबंधों से भी बढ़कर यह संबंध है, शिष्य पूर्णतया ईश्वर के प्रति समर्पित तथा आज्ञापालन में दास सम है। दायें ओर झुके व्यक्ति प्रायः अपने स्वामी, नौकर या अपने पति के प्रति अत्यन्त समर्पित होते है। परन्तु विवेकहीनता की कमी के कारण वे गलत लोगों के दास होते है। श्री राम की सहायता जब आप लेते है तो वे आपको बताते है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा या श्री राम जैसे गुरू के अतिरिक्त आपको किसी के प्रति समर्पित नही होना। तब आप एक स्वंतत्र पक्षी होते है और पूरी नौ शक्तियां आपके अन्दर जागृत हो जाती है।

आपके अहं के साथ साथ बहुत सी अन्य बुराईयों का श्री हनुमान प्रतिकार करते है। यह तथ्य लंका दहन कर रावण की खिल्ली उड़ाने में अत्यन्त मधुरता से प्रकट हो जाता है कि किस प्रकार वे लोगों का अहं समाप्त कर देते है। किसी भी अंहकारी का यदि मजाक उड़ाया जाये तो वह ठीक हो जाता है। जब रावण ने श्री हनुमान से पूछा "तुम केवल एक बन्दर क्यों हो" तो हनुमान जी ने अपनी पूंछ से उसकी नाक को गुदगुदा दिया। यदि कोई अंहकारी व्यक्ति आपको सताने का प्रयत्न करता है तो श्री हनुमान उसका ऐसा मजाक उड़ायेगे कि आप हम्पटी डम्पटी की तरह उसकी अवस्था को देखकर दंग रह जायेगें।

अहंकारी लोगों से आपकी रक्षा करना तथा सद्दाम हुसैन जैसे अहंकारी व्यक्तियों को नीचा दिखाकर आपकी रक्षा करना श्री हनुमान का कार्य है। इन मामले में हनुमान से कार्य करने के लिये कहा गया और अब किस तरह से उन्होनें सददाम को कांठनाइयों में डाल दिया है, उसकी समझ में नही आता कि वह क्या करें। यदि वह युद्ध को चुनता है तो पूरा ईराक समाप्त हो जायेगा। वह स्वयं समाप्त हो जायेगा, कुवैत समाप्त हो जायेगा और पूरा पैट्रोल समाप्त होने के कारण सभी लोग कांठनाई में फंस जायेगें। सददाम का क्या होगा? वह बचेगा ही नही क्योंकि यदि अमेरिकन लोगों को लड़ना पड़ा तो वे ईराक के अन्दर जाकर लड़ेगे। तो अब श्री हनुमान सददाम के मस्तिष्क में घुस कर बता रहे है "देखों तुमने ऐसा किया तो इसका परिणाम यह होगा"। सभी राजनीतज्ञो तथा अहंकारी व्यक्तियों के मस्तिष्क में श्री हनुमान कार्य करते है और यही कारण है कि कभी कभी राजनीतज्ञ अपनी नितियां बदल देते है और अपना कार्य चलाते है। श्री हनुमान का एक अन्य गुण यह है कि वे लोगों को स्वेच्छाधारी बना देते

है। दो अहंकारी व्यक्तियों को मिलवाकर वे उनसे ऐसे हालात पैदा करवा देते है कि दोनों नम्र होकर मित्र बन जाते है। हमारे अन्तस का हनुमान तत्व हमारे अहं का ध्यान रखने तथा हमें बाल सुलभ, मधुर, विनोदशील और प्रसन्न बनाने में कार्यरत है। वे सदा नृत्य भाव में होते है। श्री राम के सम्मुख नतमस्त हो श्री हनुमान सदा उनकी इच्छा को पूर्ण करना चाहते है। यदि श्री गणेश मेरे पीछे बैठते है तो श्री हनुमान मेरे चरणों में। यदि श्री हनुमान की तरह जर्मन लोग भी आज्ञाकारी हो जायें तो हमें कितनी गतिशील कार्यवाहिनी प्राप्त हो सकती है?

सीता द्वारा दिये गये हार में क्योंकि श्री राम न थे अतः श्री हनुमान ने वह हार न पहना। इसी घटना से उनके समर्पण का पता चलता है। श्री हनुमान जी का हर वक्त उनके इर्द गिर्द मंडराना सीता जी को अटपटा लगा। सीता जी ने उनसे कहा कि केवल एक कार्य के लिये वे वहां रुक सकते है तो श्री हनुमान जी ने कहा कि जब जब श्री राम जी जुम्हाई लेगें तों चुटकी बजाने के लिये मैं उनके साथ रहूंगा। सीता जी ने उनसे छुटकारा पाने के लिये यह बात मान ली। फिर भी उन्हें वहां खड़ा हुआ देखकर जब सीता जी ने इसका कारण पूछा तो उन्होनें उत्तर दिया "मैं श्री राम के जुमहाई लेने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ" मैं यहां से कैसे जा सकता हूँ?

सहजयोग में मेरा संबंध एक गुरु तथा एक मां का है। एक गुरु के नाते मेरी चिन्ता यह है कि आप सहजयोग का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें। सहजयोग विशेषज्ञ बनकर आप स्वयं के गुरु बने। परन्तु इसके लिये पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है। पूर्ण समर्पित होकर ही आप सहजयोग को चलाना सीख सकते है। श्री हनुमान भी यह समर्पण करते है। अहंकारी लोग क्योंकि समर्पण नही करते अतः श्री हनुमान जी उन्हें समर्पण सिखाते है अथवा समर्पण के लिये विवश करते है। किसी प्रकार की बाधाओं, चमत्कारों या विघ्नों द्वारा वे शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण करवाते है।

गुरु के प्रति व्यक्ति का समर्पण करवाने की शक्ति श्री हनुमान जी की ही है। न केवल वे स्वयं समर्पित है वे दूसरों को भी समर्पण करवाते है। अहं के कारण आप समर्पण नही कर सकते। अपनी आत्मव्यक्ति में उन्होनें दर्शाया है कि दायें पक्ष का भी एक अति सुन्दर पहलू है। इसका पूर्ण आनन्द

प्राप्त करने के लिये अपने गुरु के प्रति आपको दास की भाँति समर्पित होना पड़ता है। बिना किसी संकोच के आपको गुरु के लिये सब कुछ करना होता है। निसंदेह गुरु का भी कर्तव्य है कि आपको आत्म साक्षात्कार दे अन्यथा वह गुरु नही है। किस तरह से आप गुरु को प्रसन्न कर सकते है और उसका सामीप्य प्राप्त कर सकते है। सामीप्य का अर्थ शारीरिक सामीप्य नही, इसका अर्थ है एक प्रकार का तारतम्य, एक प्रकार की समझ। मुझसे दूर रहकर भी सहजयोगी अपने हृदय में मेरा अनुभव कर सकते है। यह शक्ति हमें श्री हनुमान से प्राप्त करनी है। सभी देवताओं की रक्षा श्री हनुमान वैसे ही करते है जैसे वे आपकी रक्षा करते है। श्री गणेश शक्ति प्रदान करते है परन्तु रक्षा श्री हनुमान करते है। जब श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी बने तो श्री हनुमान ही रथ की पताका पर आरूढ थे श्री गणेश नही। एक प्रकार से श्री राम स्वयं श्री कृष्ण बन जाते है अतः श्री हनुमान को उनकी सेवा करनी ही होती है। जैसा कि आप जानते है श्री हनुमान देवदूत गैब्रीयल थे। संदेश वाहक गैब्रीयल मोरया के संदेश लेकर आये और उन्होनें "इमैक्यूलेट साल्वे" अर्थात "निर्मल साल्वे" शब्द का प्रयोग किया जो कि मेरा नाम है। जीवनपर्यन्त मोरया को श्री हनुमान की सेवा स्वीकार करनी पड़ी। मोरया महालक्ष्मी है और सीता और राधा कौन है? हनुमान को उनकी सेवा के लिये वहां विद्यमान रहना पड़ा। कभी कभी लोग मुझ से प्रश्न करते है कि मां आपको कैसे पता चला? मां आपने कैसे संदेश भेजा? मां आपने किस प्रकार यह कार्य कर दिया, यह श्री हनुमान का उत्तरदायित्व है। जो भी योजना मेरे मस्तष्क में बनती है श्री हनुमान उन्हें कर डालते है क्योंकि पूरी संस्था भलीभाँति संयोजित है। ये सभी संदेश आप लोगों को कहां से प्राप्त होते है? बहुत से लोग कहते है "मां मैने बस आपकी प्रार्थना की"। एक व्यक्ति की मां कैन्सर से मर रही है। जब वह उससे मिलने गया तो किंकर्तव्यविमूढ हो उसने प्रार्थना की "श्री माता जी कृपया मेरी मां को बचा लिजीये"। श्री हनुमान उस सहजयोगी की सच्चाई तथा गहनता को जानते है। उन्हें इस व्यक्ति के वजन का ज्ञान है। इसी कारणवश तीन दिन के अन्दर वह स्त्री ठीक होकर बम्बई लायी जाती है और डाक्टर घोषणा करता है कि उसका कैन्सर ठीक हो चुका है। कई घटनायें जिन्हें आप चमत्कार कहते है, श्री हनुमान द्वारा की हुई होती है। चमत्कार करने वाले वे ही है। आप कितने बुद्धहीन तथा मूर्ख है, यह दिखाने के लिये श्री हनुमान चमत्कार करते है: दायें भाग में होने के कारण वे अहं की ओर चले जाते है। अहं के कारण एक मानव आनवार्यतः बुद्धहीन हो जाता है। हनुमान जी को यह पसन्द नही। इस बुद्धहीनता का विपरीत असर जब उन लोगो पर पड़ता

है तो उन्हे अपनी मूर्खता का आभास होता है। परन्तु कभी कभी यूरीज रोग की तरह पुनः अवलोकन करना अत्यन्त कठिन कार्य हो सकता है क्योंकि श्री हनुमान ऐसे व्यक्तियों से विद्युत चुम्बकीय शक्ति वापस ले चुके होते है तथा उनके चेतन मस्तिष्क से उनका संबंध समाप्त हो चुका होता है। फलस्वरूप उनका चेतन मस्तिष्क कार्य करना बन्द कर देता है। पूर्ण श्रद्धा से यदि ऐसे लोग श्री हनुमान जी की पूजा करें तभी संभवतः उन्हें बचाया जा सके। उदाहरणतया जाड़े के कारण यदि आपके शरीर पर चर्म रोग हो जाये तो उस पर गेरू मलने से आप ठीक हो सकते है। किसी बाधा के कारण हुये चर्म रोग को भी आप ठीक कर सकते है। दूसरी ओर श्री गणेश का शरीर सिंदूर से ढका हुआ होता है जिसका प्रभाव अत्यन्त शीतल है। उनके शरीर के अन्दर की गर्मी तथ प्रभाव को संतुलित करने के लिये वे ऐसा करते है। इसी कारण हम इसे सिन्दूर कहते है। लोग कहते है कि सिन्दूर कैन्सर का कारण बन सकता है परन्तु यह आपके अन्दर इतना शीतलीकरण कर सकता है कि आप बांयी ओर को झुक सकते है। कैन्सर एक मनोवैज्ञानिक रोग है और बहुत कम सम्भावना है कि सिन्दूर के अत्यधिक शीतलीकरण से आपका झुकाव बायी ओर को हो जाये। आप ऐसे रोगाणुओ (वायरस) से ग्रस्त हो जाये कि आप इस रोग से ग्रस्त हो सकें। परन्तु अत्यन्त दायी ओर झुके व्यक्तियों के लिये सिन्दूर लाभदायक है। उन्हे शान्त करने के लिये उनकी आज्ञा पर सिन्दूर लगाने से उनका क्रोध कम हो जाता है और वे शान्त हो जाते है।

श्री हनुमान हमारी उतावली, जल्दबाजी तथा आक्रमणशीलता को ठीक करते है। उन्होने हिटलर के साथ भी एक चालाकी की। हिटलर श्री गणेश को प्रतीक रूप में प्रयोग कर रहा था अतः स्वास्तिक दक्षिणावर्त (क्लाकवाइज) होना चाहिये था। प्रयोग में आने वाले स्टेनल को उलट कर श्री हनुमान ने स्वास्तिक को उलटा करवा दिया। आदि शक्ति ने उन्हे ऐसा करने की सलाह दी परन्तु चाल उन्होने चली। स्वास्तिक के उलटा होते ही श्री गणेश तथा श्री हनुमान दोनों ने हिटलर को विजय प्राप्त करने से रोक लिया। तो इस तरह की छोटी छोटी युक्तियां होती रहती है। एक बार मुझे याद है कि जर्मनी में मेरी पूजा रखी गयी। जर्मनी के लोगो को क्योंकि हनुमान की बहुत आवश्यकता है अतः वहां श्री हनुमान बहुत चालाकी करते है। पूजा के दिन गलतीवश स्वास्तिक उलटा लगा दिया गया। प्रायः मैं इन चीजों को देख लेती हूँ परन्तु उन दिन ऐसा नहीं हुआ। मेरी दृष्टि बाद में जब उस उलटे स्वास्तिक पर पड़ी तो मेरे मुंह से है निकला "हे परमात्मा इस गलती का दुष्प्रभाव किस देश पर होने वाला है"

श्री हनुमान मूसलाधार बारिश और वेगवान आन्धी की तरह जाकर विनाश कर देत है। अपनी विद्युत चुम्बकीय शक्ति द्वारा वे ये सारे कार्य करते है। भौतिक तत्व उनके नियंत्रण में है, वे वर्षा, धूप और हवा की रचना आपके लिये करते है। पूजा या मिलन के लिये वह उचित प्रबन्ध करते है। बिना किसी के जाने सुन्दरता से सारे कार्य वे कर डालते है। हमें हर समय उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिये। श्री हनुमान एक तेजस्वी देवदूत है। वे सन्यासी या त्यागी नही है। सुन्दरता तथा सज्जा उन्हें बहुत प्रिय है। उनके बहुत से भक्तों का विचार है कि वे ब्रहमचारी है और कम वस्त्र धारण करते है। अतः वे नही चाहते कि स्त्रियां उन के दर्शन करें। परन्तु लोग ये नही जानते कि वे एक सनातन शिशु है और वो भी एक बन्दर बालक। बन्दरों के लिये वस्त्र पहनना अनिवार्य नही। यद्यपि उनका शरीर विशालकाय है फिर भी आप उनका सुन्दर आकार ही देख पाते है। बड़े बड़े नाखूनों के होते हुये भी वे मेरी चरणस सेवा बड़ी कोमलता से करते है और अब मुझे लगता है कि श्री हनुमान की कृपा से जर्मन लोगों की कार्य प्रणाली भी अत्यन्त कोमल होती चली जा रही है। परमात्मा आप पर कृपा करें।

चैतन्य लहरी
1990

श्री महावीर पूजा ﴾ सारांश ﴿
जून 16 - 1990
बार्सिलोना स्पेन

आज पहली बार महावीर पूजा हो रही है। महावीर का त्याग अत्यन्त विकट प्रकार का था। उनका जन्म एक ऐसे समय पर हुआ जब ब्राहमणवाद ने अत्यन्त भ्रष्ट, स्वेच्छाचारी तथा उच्छृंखल रूप धारण कर लिया था।

मर्यादापुरूषोत्तम श्री राम के पश्चात लोग अत्यन्त गम्भीर, तंग दिल तथा औपचारिक हो गये थे। आत्म सक्षात्कार के अभाव में वे सदा एक अवतरण की नकल का प्रयत्न अति की सीमा तक करने लगे। इन बंधनों को समाप्त करने के लिये श्री राम पुनः श्री कृष्ण रूप में अवतरित हुये । अपने कार्यकलापों के उदाहरण से श्री कृष्ण ने यह प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया कि जीवन एक लीला ﴾खेल﴿ मात्र है। शुद्ध हृदय से यदि व्यक्ति जीवन लीला करता है तो कुछ भी बुरा नहीं हो सकता।

श्री कृष्ण के पश्चात लोग अति लम्पट, स्वेच्छाचारी और व्यभिचारग्रस्त हो गये। लोगों को इस तरह के उग्र आचरण के बन्धनों से मुक्त करने के लिये इस समय भगवान बुद्ध तथा महावीर ने जन्म लिया।

श्री महावीर एक राजा थे जिन्होनें अपने परिवार, राज्य तथा सम्पदा का त्याग कर सन्यास ले लिया। उनके अनुयाइयों को भी इसी प्रकार का त्याग करने को कहा गया। उन्हें अपना सिर मुंडवाना पड़ता था, नंगे पैर चलना पड़ता था। वे केवल तीन जोड़े कपड़े रख सकते थे। सूर्यास्त से पूर्व उन्हें खाना खा लेना पड़ता था। केवल पांच घन्टे सोने की उन्हें आज्ञा थी और हर समय ध्यान में रह कर आत्म उत्थान में प्रयत्नशील होना होता था। पशु वध और मान्स भक्षण उनके लिये वर्जित था क्योंकि उस समय के लोग मान्स भक्षण के कारण अति आक्रामक हो गये थे।

श्री महावीर सैन्ट माइकेल का अवतार थे। सैन्ट माईकल ईडा नाड़ी पर निवास करते है तथा मूलाधार से सहस्रार तक इस नाड़ी की देखभाल करते है। वामपक्षी होने के कारण श्री महावीर ने लोगो को दुश्कार्य न करने की चेतावनी देने के लिये नर्क का वर्णन बहुत ही स्पष्ट रूप में किया है। उन्होनें लोगो को कर्मकाण्ड से बचाने के लिये परमात्मा

के निराकार तत्व के विषय में बताया। इतने कठिन नियमों के कारण व्यक्ति के लिये आत्मसाक्षात्कार का उम्मीदवार होना भी दुष्कर कार्य हो गया।

श्री महावीर के अनुयाइयों ने जैन मत चलाया। जैन का उदगम "जना" अर्थात "ज्ञान प्राप्ति" से है। मोजज की तरह श्री महावीर के भी कठोर नियम थे। जैसा प्रायः होता है उनके सिद्धांतों को भी अंत की अवस्था तक ले जाया गया। भारत में आजकल एक प्रथा है झोपड़ी में किसी ब्राहमण के पास बहुत से खटमल छोड़ दिये जाते है। खटमल जब ब्राहमण के रक्त से अपना पेट भर लेते है तो जैनी लोग उसे बहुत साधन देते है। शाकाहार तथा संयम के विषय में कट्टर होते हुये भी वे धन लोलुप है। वे एक मच्छर को तो नही मारेगें परन्तु थोड़े से रूपयों के लिये किसी व्यक्ति का रक्तपान करने से नही चूकेंगें। एक अंत से दूसरी अंत की गर्त में गिरने वाले मनुष्यों को संतुलन की स्थिति में लाने के लिये सदा अवतरण हुये है। धर्मानुयाइयों के मध्य में स्थित न होने के कारण सभी धर्म हास्यास्पद प्रतीत होते है।

श्री महावीर के सन्यासियों की भाँति यदि सहजयोग को आरम्भ किया गया होता तो कितने लोग सहजयोग में आये होते? एक सन्यासी का अपनी पत्नी, बच्चों तथा धन-सम्पत्ती से कोई सरोकार नही होता था। उसे थोड़ा सा खाना देकर अनुसरण करने की कठोर आज्ञा दी जाती थी।

एक सहजयोगी के सर्व प्रथम साक्षात्कार दिया जाता है तथा उसकी कुंडलनी उठायी जाती है। बिना किसी शुद्धिकरण या कर्मकाण्ड के उसका स्वागत किया जाता है। उसे नर्क के विषय में कुछ नही बताया जाता। केवल आत्मसाक्षात्कार द्वारा ही वह पूर्णतया निर्लिप्त तथा बुद्धिमान बन सकता है। परन्तु आज भी सहजयोगियों में निर्लिप्तता का अभाव है। सहजयोग में विवाह करवाकर लोग खो से जाते है। वे या तो एक दूसरे के प्रति लिप्त हो जाते है या साधारण पाश्चमी लोगों की तरह परस्पर झगड़कर तलाक की बात करने लगते है।

सहजयोगी ये नही समझते कि सहजयोग के लिये उनका विवाह हुआ है। जिस सागर से निकल कर वह नाव पर सवार हुये थे उसी सागर में वे अब भी गिर रहे है। उदाहरण के रूप में साक्षात्कार से पूर्व तो व्यक्ति फिल्म देखने का, फुटबाल खेलने

का या पिकनिक आदि का शौकीन हो सकता है परन्तु वे तो साक्षात्कार के उपरान्त भी इन्ही के दीवाने बने रहते है। इन चीजों से लिप्सा का अर्थ तो यह है कि ऐसे मनुष्य ने अभी तक आनन्द की गहनता का स्पर्श भी नही किया। "एक बार जब आप उस गहन आनन्द का स्पर्श कर लेते है तो किसी अन्य वस्तु की चिन्ता आप नही करते। पूर्णतया आत्म-केन्द्रित होकर स्वानन्द में आप डूब जाते है।

"नर्क के विषय में बता कर मैं तुम्हें भयभीत करूं या नही - मेरी समझ में नही आता। परन्तु श्री महावीर की यह ऐसी पूजा है जिसे मैं अब तक टालती रही हूँ।" यहां तक कि उनके शिष्यों को भी केवल एक सफेद धोती पहननी पड़ती थी, नंगे पावं चलना पड़ता था तथा प्रातः चार बजे उठना होता था।" अब सहजयोग में इसके बिलकुल विपरीत है। आप परस्पर संगीत का तथा संगीत का आनन्द लेते है। सहजयोग आप के लिये केवल आनन्द मात्र ही है। परन्तु अन्तर-निहित आनन्द के स्पर्श के बिना आपका उत्थान नही हो सकता। अपने अन्तस के आनन्द स्पर्श के पश्चात आप शेष सभी वस्तुओं का आनन्द लीजीये।

श्री महावीर के विषय में एक किस्सा है। ध्यान अवस्था में एक दिन उनकी धोती एक झाड़ी में उलझ गयी। परिणामतः उन्हें आधी धोती फाड़ कर वही छोड़नी पड़ी। शेष आधी धोती में जब वे चले तो भिखारी के वेष में श्री कृष्ण उन्हें छोड़ने के लिये आ पहुंचे। श्री महावीर ने दया वश अपनी आधी धोती भी उस भिखारी को दे दी तथा स्वयं पत्तो से शरीर को ढांप कर वस्त्र पहनने के लिये अपने घर वापिस चले गये। परन्तु आज उनके कुछ शिष्य अनुयायी इस वृतान्त की आड़ में भारत के गांवों में निर्वस्त्र होकर घूमते फिरते है। "मुझे विश्वास है कि आप सब उस निम्नावस्था तक न जाकर भी स्वानुशासन अवश्य सीखोगें। इसके बिना पूर्ण ज्ञान, प्रेम तथा आनन्द की गहनता तक नही पहुंच सकते।

"निसंदेह आपको श्री महावीर की सीमा तक जाने की आवश्यकता नही है क्योंकि आपके सौभाग्यवश मैने आपको आत्मसाक्षात्कार प्रदान किया है। फिर भी भौतिक वस्तुओं की ओर न लौटिये"।

"अपने प्रयोग के प्रति मैं आश्वस्त हूँ कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद शने शने लोग निर्लिप्त हो जायेंगे।" इस निर्लिप्तता को प्राप्त करने में सभी लोग सहयोग दे। माया के सागर से निकलने की आवश्यकता है ताकि सहजयोग भी कहीं दूसरे धर्मों की तरह बनकर न रह जाये। किसी को भी यह बताने की आवश्यकता नही कि वह क्या

करे। केवल गहनता का स्पर्श आवश्यक है जिससे कि व्यक्ति अन्तस से त्यागी बन जाये।

"सहजयोग इन सभी पैगम्बरों तथा अवतरणो का एकीकरण है।" सहजयोग की विश्वभर में प्रगति के लिये सहजयोगियों को सच्चा तथा निष्कपट बनना है और अपने कार्य कलापों का ज्ञान प्राप्त करना है। कोई भी महावीर पूजा क्यों नह हुई? इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिये हर सहजयोगी को यह टेप सुनना चाहिये। "परमात्मा आपको धन्य करें।"

चैतन्य लहरी - अगस्त 1990
श्री आदि कुंडलिनी पूजा (आर्सदृया)
सारांश

आदि कुंडलिनी मूल कुंडलिनी है। वह आदि मां की एक शक्ति है जो कि मानव में कुंडलिनी के रूप में प्रतिबिम्बित है। इस अवतरण के लिए बहुत कार्य हुआ। परिवर्तन के इस महान कार्य के लिए उत्तरदायी आदि कुंडलिनी को सम्हालने के लिए एक सुदृढ मेरु-दंड की रचना हेतु विशेष रूप से कार्य करना पड़ा। मुक्ति प्रदान करने की शक्ति तो आदि कुंडलिनी में थी परन्तु उसे जानना था कि मानव की सहायता किस प्रकार की जाय, उनकी समस्याएं क्या है, उन्हें सहज योग की तथा अपने उत्थान की समझ तक कैसे लाय जाये। उर्जा तथा ज्ञान के बहुत से स्त्रोत प्रयोग करने पड़े इस जटिल विश्व में मूल कुंडलिनी ने कार्य करना था। हिमालय पर जाने वाले अत्यन्त समर्पित, जिज्ञासुओं की अपेक्षा हममें भिन्न प्रकार के बन्धन तथा अर्न्तबाधाएं है। आदि कुंडलिनी से सम्पर्क रखने के लिये मूल-कुंडलिनी को मानव मात्र के सभी पक्षों को समझना पड़ा। उन्हें स्वयं भी श्री महा माया के रूप में अवतरित होना पड़ा जिससे कि भयभीत हो हम उनसे दूर न हों।

वे दो भागों में विभाजित है। एक कुंडलिनी और दूसरा सहस्रार। सहस्रार कुंडलिनी को सारी सामग्री, सारी सूचना देता है और कुंडलिनी इसे व्यवहारिकता देती है। शरीर तथा सहस्रार में बने देवता हर आवश्यक सूचना देते है। मूल कुंडलिनी सामूहिकता तथा व्यक्ति, दोनों के लिए एक साथ कार्य करती है। ध्यान जो कि मस्तिष्क तथा सहस्रार की शक्ति है भी अत्यन्त गहन तथा चुस्त होना चाहिये।

आदि कुंडलिनी तथा सहस्रार की रचना करने के लिए यह सारा कार्य करना पड़ा। हर राष्ट्र तथा व्यक्ति के भिन्न बन्धन थे। इस कठिन कार्य को करने हेतु मूल कुंडलिनी को धैर्य के अनन्त सागर की आवश्यकता थी । सहजयोग के लिए मंच स्थापन कार्य अति जटिल था क्योंकि परिवर्तनशील और सूक्ष्म होते हुये भी यह बड़े स्नेह तथा प्रेम का कार्य था।

इस अवतरण का सृजन करने को परम चैतन्य की पूरी बुद्धि प्रयोग की गयी। मानव शरीर धारण कर सामूहिक आत्म-साक्षात्कार देने की कला का ज्ञान प्राप्त करना कठिन कार्य था। यह कार्य सहस्रार द्वारा किया गया। इसमें सफलता प्राप्त हो चुकी है। परमात्मा की सभी महान योजनाएं आश्चर्यजनक है। श्री माताजी स्वयं आश्चर्यचकित है कि इतने अधिक लोग कैसे सहजयोग में आ गये है। हमारे अन्दर प्रतिबिम्बित कुंडलिनी को यदि हम वास्तव

में समझना चाहते है तो हमें मूल कुंडलिनी की कार्य विधि को देखना पड़ेगा। श्री माताजी की कुंडलिनी के विषय में सोचते ही हम निर्विचार हो जाते है। श्री माताजी के चक्रों के विषय में सोचने से हमारे चक्र ठीक हो जाते है। परन्तु हमारे अन्दर आवश्यक गहनता, मर्यादा तथा अधिकार होना चाहिये। अब भी बहुत से सहयोगियों में स्वयं को परिवर्तित करने का साहस नही है, वे बहुत से बंधनों में फंसे हुये है। पूरे साहस के बिना हम सहजयोग को निर्विलम्ब स्थापित नही कर सकते। अत्यन्त कठिनाइयां सहने के कारण हमारी कुंडलिनी उपहत तथा दुर्बल हो गयी है। केवल मूल कुंडलिनी के प्रति समर्पण से ही हमारी कुंडलिनी बलशाली हो सकेगी। वास्तविकता में विलीन होना हमारी प्रथम इच्छा होनी चाहिये। वास्तविकता में विलीन होने के पश्चात निर्लिप्तता या सदगुणो की चिन्ता अनावश्यक है। हमारे दिव्य हो जाने के कारण ये स्वतः ही हममें आ जाते है। एक बार दिव्य हो जाने के पश्चात हमारी कुंडलिनी अत्यन्त सुन्दर तथा मूल कुंडलिनी को प्रतिबिम्बित करने वाली हो जाती है।

बिना कोई तय किये हम सब के पहले दिन से ही आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है। भौतिक उपलब्धियों के रूप में आशीर्वाद केवल प्रलोभन मात्र है और श्री माताजी ने इनमें न फंसने की चेतावनी दी है। हमें और आगे बढ़ना है। बिना हमारे शुद्धिकरण, बिना हमें कुछ बताये और बिना हमसे कुछ मांगे, साक्षात्कार हमें प्रदान किया गया। साक्षात्कार के पश्चात हम अपनी कुंडलिनी से बंध गये है। अतः उसका प्रयोग जानकर हमें अपनी समस्याओं का समाधान करना चाहिये। इसकी विधि का ज्ञान भी होना चाहिये। विश्व को यदि हम परिवर्तित करना चाहते है तो हमें आदर्श, दृढ़प्रतिज्ञ होना पड़ेगा तथा जिस महान कार्य के साथ हम सम्बन्ध हुये है उसे पूरी तरह समझना होगा। स्वयं को तैयारी की अवस्था में रख निष्कपटता से यदि हम इच्छा करेंगे तो एक दिन महायोगी बन जायेंगे।